वृन्दावन के रंग मन्दिर
का
श्रीब्रह्मोत्सव

वृन्दावन शोध संस्थान

वृन्दावन के रंग मंदिर
का
श्रीब्रह्मोत्सव

(संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के अनुदान से प्रकाशित)

प्राक्कथन

भवानीशंकर शुक्ल

अध्यक्ष

वृन्दावन शोध संस्थान

संपादक

डॉ. महेशनारायण शर्मा

निदेशक

वृन्दावन शोध संस्थान

संकलन एवं सह-संपादन

डॉ. राजेश कुमार शर्मा

वृन्दावन शोध संस्थान, वृन्दावन

प्रकाशक :

वृन्दावन शोध संस्थान

रमणरेती, वृन्दावन

Phone : 91-5652540628, 6450731 * Fax : 0565-2540576
Website : www.vrindavanresearchinstitute.org
Emil : vrindavanresearch@gmail.com

ISBN : 978-81-904946-5-6

सर्वाधिकार सुरक्षित

संस्करण – प्रथम
वर्ष २०११-१२

मूल्य : 250/- (पेपर बैक)
275/- (सजिल्द)

मुद्रक : पुलकित क्रिएशन
कृष्णानगर, मथुरा
मो. ९०४५१७२०२२, ९७१९०१७६८७

प्राक्कथन

भारतीय संस्कृति के विविध पक्षों का संकलन, सर्वेक्षण एवं अनुसंधान के विकास को दृढ़ संकल्पित, वृन्दावन शोध संस्थान सदैव संस्कृति के विभिन्न पक्षों पर शोधपरक ग्रंथों का प्रकाशन करता आया है। ब्रज संस्कृति सृजन की संस्कृति है। यहाँ का सांस्कृतिक वैभव बेजोड़ है। अपनी सांस्कृतिक सम्पन्नता के सबब आज भारतवर्ष की ख्याति अंतर्राष्ट्रीय पटल पर देखी जा सकती है। बात अगर भारतीय संस्कृति की हो तो ब्रज मंडल की चर्चा स्वत: ही मुखरित हो उठती है। वृन्दावन ब्रज मंडल का महत्वपूर्ण एवं विशिष्ट स्थल है। प्राचीन काल से ही आकर्षण का केन्द्र रही यह पावन धरा स्वयं में अनेक विशिष्टतायें समोए हुए है। किसी भी देश, जाति और समाज की सजीवता तथा समृद्धि का अनुमान उसके उत्सव, त्यौहार और मेलों आदि से लगाया जा सकता है, जो समाज जितना अधिक उत्सव प्रिय होगा वह उतना ही अधिक सुखी समृद्ध और सम्पन्न भी। वृन्दावन सदैव से ही अपने उत्सव समारोह एवं मनोरथों के लिए प्रसिद्ध रहा है; यह गुण विशेष ही इसकी सांस्कृतिक समृद्धि का द्योतक है। यहाँ सदैव उत्सव समारोहों की अधिकता रही है। आज भागमभाग दिनचर्या में जब प्रत्येक जन का जीवन अनेक झंझटों में उलझ कर अशांत बना हुआ है, ऐसे में भी यहाँ के लोग अपने इन उत्सव, त्यौहार और मेलों के कारण ही आनंद और उल्लास का अनुभव कर लेते हैं। ब्रज में कोई ऋतु और ऋतु का कोई महीना ही नहीं वरन् महीने का भी शायद ही कोई दिन ऐसा हो जब यहां कोई छोटा बड़ा उत्सव या मनोरथ न मनाया जाता हो। यहाँ धार्मिक भाव से अनुप्राणित इन मेलों या मनोरथों का संबंध किसी न किसी रूप से देवाराधन से जुड़ा है।

वृन्दावन के रंग मंदिर की समृद्ध परंपरा में चैत्र माह के अंतर्गत आयोजित श्रीब्रह्मोत्सव का आयोजन स्थानीय जन ही नहीं अपितु देशी-विदेशी लोगों के लिए भी आकर्षण का केन्द्र रहता है। वैदिक रीति रिवाज से सम्पन्न श्री रंग मंदिर के इस उत्सव के अंतर्गत दस दिनों तक प्रात: एवं सायं बेला में निकलने वाली सवारियों के दौरान यहाँ आयोजित रथ की सवारी अत्यधिक श्रद्धा का केन्द्र रहती है। श्रीब्रह्मोत्सव के दौरान रथ की सवारी के आकर्षण को देख ब्रिटिश कलेक्टर एफ.एस.ग्राउस ने अपने ऐतिहासिक ग्रंथ 'मथुरा ए डिस्ट्रिक्ट मेमोयर' में इसकी जानकारी देते हुए इसे जनता के मध्य काफी लोकप्रिय बताया है। दाक्षिणात्य परंपरा से आयोजित श्री ब्रह्मोत्सव में सवारियों का

आकर्षण देखते ही बनता है। भारतवर्षीय दिव्य देशों में आयोजित श्री ब्रह्मोत्सव की परम्परा प्राचीन एवं वेद आधारित है। श्री ब्रह्मोत्सव का आयोजन दिव्य देशों में ही सम्भव है चूँकि इसके आयोजन हेतु गरुड़ स्तम्भ, श्रीयागशाला, गोपुरम एवं बलि पीठम् आदि दिव्य देशों में ही स्थित होते हैं इसलिए इन्हीं स्थलों पर श्री ब्रह्मोत्सव का आयोजन हर्षोल्लास से होता है। वृन्दावन के श्रीरंग मंदिर में दाक्षिणात्य रीति रिवाज से मनाये जाने वाले इस उत्सव का प्रत्येक मनोरथ हृदयस्पर्शी होता है।

इसके अन्तर्गत आयोजित होने वाले मनोरथों को देखने के लिए जहाँ समीपवर्ती ग्रामीणों सहित स्थानीय लोगों में भारी उत्साह देखा जा सकता है वहीं अनेक देशी-विदेशी श्रद्धालु भी इसमें दस दिनों तक प्रतिदिन होने वाले भव्य एवं नव्य आयोजनों को बस देखते ही रह जाते हैं। मूल प्रसंगों की जानकारी के अभाव में अधिकांश स्थानीय वर्ग इस महत्वपूर्ण परम्परा के अनेक पक्षों से अनभिज्ञ ही रहा है; जिससे अनेक स्थलों पर विविध लीला प्रसंगों को लेकर भ्रम पूर्ण स्थिति उत्पन्न हो जाती है। इस पुस्तक का प्रकाशन संस्थान की सर्वेक्षण तथा अभिलेखीकरण की योजनाओं के अंतर्गत किया जा रहा है। सर्वेक्षण तथा अभिलेखन का कार्य श्री राजेश कुमार शर्मा ने बड़े परिश्रम और मनोयोग से पूरा किया है। एतदर्थ वह प्रशंसा के पात्र हैं। पुस्तक में जो चित्र दिये गये हैं, उनका छायांकन संस्थान के फोटोग्राफर श्री उमाशंकर पुरोहित ने किया है; वह भी प्रशंसा के पात्र हैं। पुलकित क्रिएशन, मथुरा के श्री ओम प्रकाश अग्रवाल, विष्णु कौशिक ने साज सज्जा पूर्वक पुस्तक का मुद्रण कर विषय का महत्व बढ़ाया है, अत: वे धन्यवाद के पात्र हैं। पुस्तक के माध्यम से श्री राजेश कुमार शर्मा ने श्रीब्रह्मोत्सव के अंतर्गत निकलने वाली सवारियों तथा उनके कथानकों सहित लोकप्रिय रथ के मेला की परम्परा सम्बन्धी जानकारियों को सूक्ष्मता से उकेरा है। वृन्दावन में आयोजित श्रीब्रह्मोत्सव की परंपरा भारत के सांस्कृतिक वैभव को प्रदर्शित करने वाली है। यह पुस्तक शोधार्थियों, श्रद्धालु भक्तों एवं पर्यटकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी; ऐसा विश्वास है।

भवानीशंकर शुक्ल

अध्यक्ष

वृन्दावन शोध संस्थान

संपादकीय

उत्सव मनोरथों में सांस्कृतिक परंपराएं, मंगलकामनायें, धार्मिक विश्वास एवं हर्षोल्लास की स्फूर्तिदायक उमंगें छिपी रहती हैं। ऐसे आयोजनों में सहभागिता करते हुए मनुष्य जीवन के संघर्षों से थोड़ी देर के लिए उन्मुक्त हो जाता है। वृन्दावन के **श्रीरंगमंदिर** में आयोजित **श्रीब्रह्मोत्सव** की परंपरा जन-मानस में उत्साह एवं आह्लाद का संचार करने वाली है। इस उत्सव के अन्तर्गत आयोजित रथ का मेला, प्रतिवर्ष एक नई जिज्ञासा लेकर आता है। इस उत्सव के प्रति आकर्षण और जिज्ञासा का जितना भाव स्थानीय जन-मन में देखा जा सकता है, उतना ही समीपवर्ती ग्रामीणों एवं दूर-दराज से आने वाले श्रद्धालुओं में भी परिलक्षित होता है। तीर्थ पुरोहितों एवं पण्डा-समाज की परम्परागत बहियाँ इसका प्रत्यक्ष प्रमाण देती हैं।

श्रीरंग मंदिर की उत्सव परंपरा में चैत्र मास में आयोजित श्री ब्रह्मोत्सव के दस दिवसीय आयोजनों का विशेष महत्व है। इनके अन्तर्गत प्रतिदिन प्रातः एवं सांय बेला में निकलने वाली विभिन्न सवारियों में स्वर्ण एवं रजत निर्मित वाहनों जैसे सिंह, सूर्य प्रभा, चन्द्रप्रभा, गरुण, सिंहशार्दूल एवं हंस आदि विभिन्न सवारियों पर प्रभु की मनोहारी छठा, मानस में एक नई आध्यात्मिक चेतना का संचार करती है। वृंदावन के विभिन्न देवालयों में आयोजित चित्ताकर्षक अनूठे मनोरथ हो या श्री रंग मंदिर की उत्सव परंपरा में श्री ब्रह्मोत्सव का आयोजन सभी भारतीय संस्कृति का उत्कृष्ट वैभव दर्शाने वाले हैं। इन्हीं विशेषताओं ने वृन्दावन को उपासनामय बना दिया है।

प्रस्तुत ग्रंथ के संदर्भ में डॉ0 राजेश कुमार शर्मा ने संस्थान की सर्वे एण्ड डाक्यूमेंटेशन परियोजना के अंतर्गत अपने कठिन परिश्रम एवं अन्वेषण से महत्वपूर्ण सामग्री का संकलन किया है। उन्हें इस कार्य में श्री रंग मंदिर के आचार्य प्रवर स्वामी श्री गोवर्धनरंगाचार्य जी महाराज एवं आश्रम गोदा विहार के

श्री अनुपम आचार्य से महत्वपूर्ण जानकारियाँ मिली हैं। संस्थान उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता है। वृन्दावन शोध संस्थान के अध्यक्ष श्री भवानीशंकर शुक्ल जी का मार्गदर्शन इस पुस्तक के प्रकाशन में आद्योपान्त रहा है, हम उनके भी आभारी हैं। पुस्तक के कलेवर को उत्तम छायाचित्रों द्वारा निखारने में छायाकार श्री उमाशंकर पुरोहित का सराहनीय योगदान रहा है। पुस्तक के प्रकाशन के संबंध में डॉ. ब्रजभूषण चतुर्वेदी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। अन्त में मैं उन सभी सहयोगियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ जिन्होंने स्वल्प समय में पुस्तक के प्रकाशन में अपना सहयोग प्रदान किया है।

डॉ॰ महेशनारायण शर्मा
निदेशक
वृन्दावन शोध संस्थान

श्रीरंग मन्दिर

श्रीरंगाचार्य महाचार्य श्रीवृन्दावन बैकुण्ठकर।
सिद्धि मंत्र सह तंत्र न्याय वेदान्त विलक्षण।।
शैव शाक्त गन जीत ध्वजा काशी रोपी पण।
'श्रीशठकोप प्रबन्ध' देवभाषा में कीने।।
ग्रन्थ अनेक प्रकाश दान विद्या के कीने।
दक्षिण सो उत्तर कियो उत्सव मंदिर विदित वर।।

(गो० राधाचरण कृत 'नव भक्तमाल' छन्द ६५)

धन - धन रंगनाथ कौ मंदिर।
राधाकृष्ण साह बनवायौ लक्ष्मीचन्द सहोदर।।
तन मन धन सब गुरु कौं दीनौ, पूरन प्रेम दिलन्दर।
कमल कुँवरि कोऊ नृपत नहीं है, आस पास तिहिं सरवर।।

(कमल कुँवरि कृत 'वृन्दावन वासिन की वन्दना महात्म्य' छन्द-३८)

''श्रीरंग मंदिर, वृन्दावन
की
आचार्य परंपरा में
अनन्त श्रीविभूषित
गोवर्धन रंगाचार्य जी महाराज
को
श्रद्धापूरित मन से
शत-शत नमन''

रंग मंदिर वृन्दावन
का
श्रीब्रह्मोत्सव

अनुक्रम

- प्राक्कथन i
- संपादकीय iii
- परिचय एवं उद्देश्य १
- श्रीरंग मंदिर एवं श्रीब्रह्मोत्सव की परंपरा ३
- श्रीब्रह्मोत्सव का कथानक, शुभारम्भ ४
- श्रीब्रह्मोत्सव की सवारियाँ ६
- रथ की सवारी ११
- रथ-संचालन एवं प्रयुक्त सामग्री १३
- रंगीन फुव्वारों का आयोजन, घोड़ा पर सवारी १४
- बड़ी आतिशबाजी, परकाल स्वामी लीला १५
- पालकी में सवारी एवं यमुना स्नान मनोरथ १७
- चन्द्र प्रभा, पुष्प विमान १८
- श्रीब्रह्मोत्सव विषयक चित्र १९
- साक्षात्कार ३१
- शब्दानुक्रमणिका ३६

श्रीरंग मंदिर वृन्दावन
का
श्रीब्रह्मोत्सव

परिचय एवं उद्देश्य-

ब्रज संस्कृति उत्सव धर्मी है। ब्रज की हृदयस्थली श्रीधाम वृन्दावन में वैसे तो वर्ष पर्यन्त कहीं न कहीं उत्सव, मनोरथों का आयोजन आम बात है लेकिन वृन्दावन के रंग मंदिर की समृद्ध परंपरा में 'श्रीब्रह्मोत्सव' का आयोजन जनमानस को सहज ही अपनी ओर आकर्षित करने वाला है। जन मानस में भक्ति, उमंग, कौतूहल एवं जिज्ञासा लिए चैत्र कृष्ण पक्ष में चित्रा नक्षत्र से धनिष्ठा तक चलने वाले दस दिवसीय ''श्रीब्रह्मोत्सव'' (रंगजी के मेले) की प्रतीक्षा स्थानीय लोगों सहित समीपवर्ती ग्रामीण बड़ी उत्सुकता करते हैं। उत्साह से लबरेज छोटे-बड़े, वृद्ध एवं महिलायें सभी इस उत्सव का भरपूर आनन्द लेते देखे जा सकते हैं। श्रीब्रह्मोत्सव की आयोजन परंपरा में एक से बढ़कर एक आकर्षक एवं हृदयस्पर्शी झाँकियों के दर्शन, कभी विशालतम रथ का आयोजन तो कभी परंपरानुसार अन्यान्य चित्ताकर्षक सवारियाँ। कहीं उच्च स्वर में भगवान गोदारंगमन्नार दिव्य दम्पति के सामूहिक गगनभेदी जयघोष तो कभी रथ की सवारी में संचालन के दौरान' **फानी लगा..., रोक कै...., डाट दै... , चलन दै. .., खैंचौ...** ' जैसे जोशीले संकेत और इन सब के साथ ही परंपरागत वाद्य यंत्रों की सुमधुर धुनें कुल मिलाकर यह समूचा परिदृश्य मन को आनंदित एवं रोमांचित करने वाला होता है। उत्साह से लबरेज जनमानस को श्रीब्रह्मोत्सव में प्रतिदिन प्रात: एवं सायं बेला में एक नया मनोरथ देखने को मिलता है। जिससे लोगों में इसके प्रति सतत् जिज्ञासा बनी रहती है।

दक्षिण भारतीय परंपरानुसार संचालित रामानुज संप्रदाय के इस मंदिर के मनोरथों एवं आयोजन के मूल प्रसंगों से अधिकांश स्थानीय वर्ग अनभिज्ञ ही रहा है। जिसके चलते लोगों ने यहाँ आयोजित कुछ मनोरथों को अपने नाम भी दे रखे हैं और लोक में इनकी ख्याति कुछ इस तरह हुई कि सामान्य वार्तालाप में इन उत्सवों को ऐसे ही नामों से सम्बोधित करते हैं। बड़ी आतिशबाजी के उपरांत स्वर्ण अश्व पर विराजमान प्रभु की सवारी के मंदिर लौटने पर वहाँ आयोजित परकाल स्वामी लीला प्रसंग के अंतर्गत संप्रदाय रीतिनुसार भीलों के द्वारा प्रभु को लूटने की लीला का अनुकरण होता है। जिसका अपना पृथक

विस्तृत कथानक है लेकिन लोक में यह मनोरथ अधिकांशत: 'भील लूटन लीला' के नाम से ही प्रसिद्ध हो चला है। मूल प्रसंगों के ज्ञानाभाव में ऐसे भ्रम और भी कई स्थानों पर दृष्टिगोचर होते हैं। श्री परकाल सूरी लीला प्रसंग में अटपटे परिधान पहने भील, किसी के गले में नाना प्रकार की सब्जियों की माला तो कोई मजबूत रस्से से बँधा हुआ अनियंत्रित विशालकाय भील, तरह-तरह की उछल-कूद और नाना प्रकार की विचित्र आवाजें जिन्हें देख छोटे-बच्चे सहम से जाते हैं और उन्हें देखे बिना भी नहीं मानते। छोटे बच्चों की तो बात ही क्या बड़े समझदार लोग भी इन दृश्यों को बस देखते ही रह जाते हैं।

दक्षिण शैली में बने उत्तर भारत के इस विशालतम दिव्य देश में आयोजित श्री ब्रह्मोत्सव के अन्तर्गत चैत्र माह में प्रतिदिन प्रात: एवं सायं बेला में एक नए कलात्मक स्वर्ण, रजत, काष्ठ वाहन पर प्रभु की सवारी निकाली जाती है। वैदिक रीति से सम्पन्न इस मनोरथ में जब प्राचीन परम्परागत वाद्य यंत्रों की सुमधुर धुनों के मध्य श्री विग्रह की सवारी निकलती है तो हजारों की संख्या में उपस्थित जन समुदाय इस अद्‌भुत दृश्य से रोमांचित हो उठता है। श्री ब्रह्मोत्सव के अन्तर्गत आयोजित विशालतम कलात्मक रथ की सवारी जो ब्रज के लोक में **''रथ कौ मेला''** के नाम से प्रसिद्ध है इसका प्रमुख आकर्षण है। बारीक कलात्मक कारीगरी से सुसज्जित लगभग ४० फुट ऊँचे इस भारी भरकम काष्ठ रथ को जब मजबूत रस्सों के सहारे हजारों की तादाद में नर-नारी, भगवान् श्री गोदारंगमन्नार के गगन भेदी जय घोषों के मध्य खींचते हैं तो यह दृश्य देखने लायक होता है। भारी भरकम इस विशाल रथ के संचालन की अपनी परम्परागत विधि है। जिसके आधार पर रथ को खींचने वाले श्रद्धालुओं का एक वर्ग तथा दूसरा पहियों के मध्य फानी लगाकर उसे नियंत्रित करने वाले लोगों की परम्परागत टोली जिनके परस्पर सामंजस्य से ही रथ की सवारी का यह भव्य आयोजन सम्पन्न हो पाता है। आयोजित श्रीब्रह्मोत्सव के अवसर पर **पूर्ण कोठी, सिंह, सूर्य प्रभा, चन्द्रप्रभा, गरुड़ जी, श्री हनुमान जी, श्री शेष जी, कल्पवृक्ष, पालकी, सिंह शार्दूल, काँच का विमान, हाथी, घोड़ा एवं पुष्प विमान** आदि सवारियां इसका विशेष आकर्षण है। वहीं आयोजन परंपरा में **यमुना स्नान, गेंद बच्छी एवं प्रणय-कलह** आदि मनोरथ आदि भी आयोजित होते हैं जिनकी अलग-अलग मान्यताएँ हैं। प्रत्येक सवारी के आरम्भ एवं बैठने (बगीचा जाकर विश्राम करना) तथा पुन: मंदिर की ओर प्रस्थान करने पर यहाँ **धूर गोला** (एक प्रकार का परम्परागत यंत्र जिसमें बारूद भरकर चलाया जाता है)

दागा जाता है। (देखें परिशिष्ट) जिसकी गूँज पूरे वृन्दावन शहर एवं समीपवर्ती ग्रामों में भी सुनी जा सकती है यह संकेत जनमानस को सवारी संबंधी सूचना देता है। यह इस ब्रह्मोत्सव का आकर्षण ही था कि ब्रिटिश काल में तत्कालीन कलैक्टर एफ.एस.ग्राउस ने अपने महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रन्थ **'मथुरा ए डिस्ट्रिक्ट मैमॉयर'** में श्री रंग मंदिर, वृन्दावन के इस ''रथ के मेले'' की जानकारी देते हुए इसे जनता के मध्य काफी लोकप्रिय बताया है। वहीं तीर्थ पुरोहितों की परंपरागत बहियों में भी श्रीब्रह्मोत्सव को देखने आने वाले यात्रियों के विवरण इसकी तत्कालीन ख्याति का आभास कराते हैं। हालांकि ग्राउस महोदय ने संपूर्ण ब्रह्मोत्सव की विस्तृत जानकारी न देते हुए केवल रथ के मेले का जिक्र किया है लेकिन फिर भी इस अल्प विवरण से तत्कालीन समय में इस परंपरा का महत्व दृष्टिगोचर होता है। श्री ब्रह्मोत्सव को लेकर अब तक कोई अभिलेखिकरण (डाक्यूमेंटेशन) न होने के कारण इसकी विस्तृत जानकारी एक साथ प्राप्त नहीं होती। जिससे इस परंपरा के अनेक महत्वपूर्ण पक्ष शोधार्थियों एवं जिज्ञासु साधकों की दृष्टि से ओझल रहे हैं।

रंग मंदिर एवं श्रीब्रह्मोत्सव की परम्परा –

वृन्दावन का श्रीरंग मन्दिर उत्तर भारत में दक्षिण शैली का सबसे विशाल मंदिर है। इस मंदिर के मुख्य अर्चाविग्रह भगवान श्रीगोदारंगमन्नार हैं तथा उनकी अर्द्धांगिनी देवी श्री गोदा देवी हैं, जिन्हें दक्षिण में आण्डाल कहा जाता है। दक्षिण भारत के प्रमुख संत श्री रंगाचार्य जी महाराज की अनुकम्पा से लगभग डेढ़ सौ वर्ष पूर्व उनके मथुरा निवासी शिष्यों सेठ राधाकृष्ण, गोविन्ददास एवं लक्ष्मीचन्द द्वारा सम्वत् १९०८ में इस विशालतम मंदिर का निर्माण कराया गया। मंदिर में सात परिक्रमा तथा सात ऊँचे-ऊँचे परकोटे हैं। मंदिर प्रांगण में दक्षिण भारतीय संस्कृति के प्रतीक गोपुरम एवं मण्डपम् निर्मित हैं। मंदिर के सिंह द्वार की ओर का गोपुरम ७ कोष्ठ वाला है। पांचरात्र शास्त्र विधि से परम्परा का निर्वाह करने वाला यह मंदिर दिव्य देश कहलाता है। इस दिव्य देश में श्रीसुदर्शन श्रीनृसिंहजी, श्री वेणु गोपाल, समस्त आलवार, भगवान भाष्यकार, शेषशायी भगवान एवं श्रीहनुमान जी के चित्ताकर्षक दर्शन श्रद्धालुओं को आनन्दित करने वाले हैं। विस्तृत क्षेत्र बारीक पच्चीकारी, विशाल बारहद्वारी, गरुड़ स्तम्भ एवं शीश महल मंदिर के वैभव का अनुभव कराते हैं। रामानुज संप्रदाय की सेवा पद्धति के अनुसार संचालित इस मंदिर में सात परिक्रमाएँ हैं, जिनमें छोटे-बड़े अनेक देवालय बने हुए हैं। मुख्य मंदिर में श्री रंगनाथ जी, लक्ष्मी जी एवं गरुड़ भगवान की भव्य प्रतिमाएँ हैं। विस्तृत क्षेत्र में फैला यह

मंदिर जनमानस में **'सेठजी का मंदिर'** या **'सोने के खम्भे'** वाला मंदिर के नाम से भी विख्यात है। रंग मंदिर में भव्य उद्यान, पुष्करणी एवं गरुड़ स्तम्भ के साथ ही अपना एक व्यवस्थित वाहन घर भी है। जिसमें स्वर्ण, रजत एवं काष्ठ निर्मित वाहन रखे रहते हैं। श्रीरंग मंदिर में होने वाले आयोजन आरम्भ से ही जनमानस के मध्य काफी लोकप्रिय रहे हैं। दिव्य देश के सन्दर्भ में प्रचलित **''नित्योत्सवेमंगलम्''** की सार्थकता यहाँ वर्षपर्यन्त होने वाले उत्सवों से देखी जा सकती है। उत्सवों की इस श्रृंखला में यहाँ श्री ब्रह्मोत्सव का आयोजन प्रतिवर्ष बड़े हर्षोल्लास से होता है; जिसे देखने के लिए स्थानीय जनता के साथ-साथ दूर-दराज के क्षेत्रों से सैकड़ों की तादाद में नर-नारी यहाँ एकत्रित होते हैं। मेले के दौरान उमड़ने वाला जन सैलाब श्रीब्रह्मोत्सव की लोकप्रियता को दर्शाता है। यजमानी परम्परा वृन्दावन के निवासियों की मुख्य वृत्ति है। इस परम्परा से जुड़े पण्डा एवं तीर्थ पुरोहितों की बहियाँ भी श्रीरंग मंदिर के इस महोत्सव की लोकप्रियता के सन्दर्भ में पर्याप्त प्रमाण देती हैं। वृन्दावन के कालियामर्दन मंदिर के सेवायत स्व॰ गोपाल प्रसाद एवं मुकेशचन्द्रपुरोहित जी की पुश्तैनी बही में सं॰ १९८१ में असोथर जिला फूलेपुर के राजा करन सिंह पुत्र विश्वनाथ सिंह द्वारा अपने बिल्लेदार मोली जी सहित श्री रंग मंदिर के ब्रह्मोत्सव को देखने आने सम्बन्धी विवरण मिलता है, (चित्र-४४, अ) जो तत्कालीन समय में इस मनोरथ की लोकप्रियता को दर्शाने वाला है। यह मंदिर अपने आरंभिक काल से ही वृन्दावन में आने वाले तीर्थयात्रियों के लिए श्रद्धा का मुख्य केन्द्र रहा है। संवत् १९४५ में दतिया की रानी कमल कुँवरि ने यहाँ रंगनाथ प्रभु के दर्शन कर स्वरचित ग्रन्थ **'वृन्दावन वासिन की वंदना महात्म्य'** (अप्रकाशित पाण्डुलिपि)[१] में इसका सुन्दर वर्णन किया है। (पृ॰ २७ चित्र-४४) ब्रह्मोत्सव के समय परंपरा के अनुसार प्रतिदिन प्रातः एवं सायं बेला में यहाँ रखे एक नये वाहन पर भगवान की सवारी निकलती है। प्रत्येक दिन नवीन वाहन पर दस दिनों तक प्रातः एवं सायं बेला में यह सवारियाँ परंपरागत **'गाड़ा'** (एक प्रकार का छोटा रथ जैसा वाहन जो श्रद्धालु द्वारा संचालित किया जाता है) पर निकलती हैं। श्रीब्रह्मोत्सव के अंतर्गत रथ के मेले एवं पालकी आदि मनोरथ के दौरान इसका उपयोग नहीं होता। इस गाड़ा को स्थानीय विशेषज्ञों का समूह कुशलतापूर्वक मंदिर से बड़ा बगीचा[२] एवं पुनः वहाँ से मंदिर की ओर लाता है। प्रत्येक सवारी के साथ परंपरानुसार वेद पाठ करते हुए ब्राह्मणों का समूह, छत्र एवं ध्वज

---

१. आचार्य विष्णुमोहन नागार्च,वृन्दावन के संग्रह से।

२. श्रीरंग मंदिर से कुछ दूर इसका अपना एक भव्य उद्यान है, जो बड़ा बगीचा के नाम से जाना जाता है। विशेष मनोरथों एवं ब्रह्मोत्सव के अवसर पर यहाँ सवारियाँ जाती हैं।

पताकाओं से अलंकृत प्रभु की सवारी, धूप-ताप से बचाव हेतु परंपरागत पर्दा तथा परंपरानुसार प्रचलित वाद्य यंत्रों की सुमधुर ध्वनि के अद्‌भुत दृश्य को देखकर बैकुंठनाथ भगवान की दिव्य आभा का सहज अनुभव किया जा सकता है। (चित्र ४५) वैसे तो मंदिर में सामान्यतया भगवद् पूजन-अर्चन, आराधन एवं उत्सव प्रतिदिन आयोजित होते हैं किन्तु मन्दिर का प्रमुख उत्सव श्रीब्रह्मोत्सव है। जो चैत्र मास के कृष्ण-पक्ष से आरम्भ होता है।

श्रीब्रह्मोत्सव का कथानक -

ब्रह्मोत्सव का अर्थ है ब्रह्मा का उत्सव। इस उत्सव में श्री गोदारंगमन्नार भगवान स्वर्ण एवं रजत निर्मित नाना प्रकार के वाहनों पर विराजमान होकर प्राणी मात्र के कल्याणार्थ दर्शन देते हैं। ब्रह्मोत्सव के सन्दर्भ में प्रचलित है कि एक बार ब्रह्मा जी ने तीर्थराज प्रयाग में बहुत से ऋषि-महर्षियों के साथ एक यज्ञ किया। अखिल कोटि ब्रह्माण्ड नायक भगवान त्रिवेणी की मंगलमयी धारा में श्री वेणी माधव रूप में दर्शन देकर अन्तर्ध्यान हो गए, लेकिन लोक कल्याण के लिए कोई मार्ग न बताया। पुनः ब्रह्मा जी ने दूसरा यज्ञ तीर्थ-गुरु पुष्कर राज में किया, वहाँ भगवान ने प्रकट होकर तीर्थ जल के रूप में दर्शन दिए। फिर भी कोई लोक कल्याणकारी मार्ग नहीं बताया। पुनः तृतीय यज्ञ नैमिषारण्य में विधि-विधानपूर्वक किया। वहाँ सहस्त्र बदन पुराण पुरुष भगवान सहस्त्रों वृक्षों एवं लताओं के रूप में दर्शन देकर अन्तर्ध्यान हो गए। इस यज्ञ में भी सफल न होने के कारण ब्रह्माजी के मन को शान्ति न हुई। उन्होंने पुनः श्री कांचिपुरी में महायज्ञ प्रारम्भ किया। वहाँ यज्ञ कुण्ड में देवाधिदेव यज्ञपति श्री वरदराज भगवान मूर्ति रूप में प्रकट हुए एवं लोक पिता ब्रह्माजी से बोले कि इस विग्रह के दर्शन मात्र से प्राणी का कल्याण होगा और भक्तों की मनोकामना पूर्ण होगी। यह बात सुनकर ब्रह्माजी ने इस यज्ञ को सफल माना।

विश्व में सर्वप्रथम भगवान के श्रीविग्रह का जो उत्सव ब्रह्माजी ने किया वही ब्रह्मोत्सव है। चैत्र मास की प्रतिपदा से आरम्भ होकर दस दिनों तक चलने वाला यह ब्रह्मोत्सव स्वयं में अनूठा और सुधि भक्तजनों के लिए आकर्षण का केन्द्र होता है। प्रतिदिन प्रातः एवं सायंकाल स्वर्ण एवं रजत वाहनों यथा सूर्यप्रभा, चन्द्रप्रभा पालकी, हाथी, घोड़ा, हनुमानजी, गरुड़ जी एवं अन्यान्य वाहनों पर सवार होकर प्रभु श्री गोदारंगमन्नार भक्तों को दर्शन देते हैं। यह सवारियाँ मंदिर से प्रारम्भ होकर बड़े बगीचे तक पहुँचती हैं। ब्रह्मोत्सव अन्तर्गत प्रतिदिन सुबह एवं सायं बेला में एक नई झाँकी भक्तों को दिव्यानंद की अनुभूति कराती है। इस उत्सव का एक अन्य आशय यह भी है कि किसी भी धर्म या जाति का

व्यक्ति भगवान के दर्शनों से वंचित न रह जाए, इसी कारण भगवान स्वयं उसे दर्शन देने इन दिनों मंदिर से बाहर आते हैं।

श्रीब्रह्मोत्सव का शुभारम्भ –

उत्सव को प्रारंभ करने के लिये सर्वप्रथम भगवान के प्रमुख पार्षद श्री विष्वक सेन जी का आह्वान पूजन किया जाता है। तत्पश्चात अगले दिन वीथी शोधन अर्थात् प्रभु की आगामी दस दिनों में सवारी जिन मार्गों से गुजरेगी उस मार्ग को चाक-चौबन्द एवं सुखद तथा व्यवस्थित बनाना जिसके लिए श्री विष्वक सेन भगवान की सवारी निकाली जाती है। मान्यता के अनुसार भगवान श्री विष्वकसेन ही उत्सव की समस्त व्यवस्थाओं का संचालन एवं निर्वहन करते हैं। मार्ग (वीथी) को सुव्यवस्थित एवं सुन्दर (शोधन) करने के निमित्त यह आयोजन वीथी-शोधन कहलाता है। लोक में इसे सड़क साफ सवारी भी कहा जाता है। श्रीब्रह्मोत्सव के अंतर्गत प्रातः शुभ मुहूर्त में ध्वजारोहण की परंपरा है। शुभ मुहूर्त में उत्सव प्रारंभ करने के लिए ध्वजारोहण के समय श्री गरुड़ भगवान का पूजन अर्चन नवीन कुश-हरिद्रा, अक्षत एवं चंदन आदि से गरुड़ स्तम्भ पर किया जाता है। मान्यतानुसार इस पूजन परंपरा का उद्देश्य जहाँ एक ओर तैंतीस कोटि देवी-देवताओं को गरुड़ जी के द्वारा ब्रह्मोत्सव की जानकारी देना है। वहीं परंपरानुसार आयोजन को पूर्ण सम्पन्न कराने का दायित्व भी उन्हें सौंपा जाता है। इस समय अर्चक गरुड़ जी स्तुति करते हुए विधिवत पूजन आदि करते हैं। तत्पश्चात् भगवान की सवारी नगर भ्रमण हेतु निकलना शुरू होती है।

श्रीब्रह्मोत्सव की सवारियाँ –

श्री ब्रह्मोत्सव के अन्तर्गत निकलने वाली सवारियाँ इसका मुख्य आकर्षण होती हैं। आम जनमानस का इसके प्रति आकर्षण देखते ही बनता है। सवारी के दौरान बजने वाले धमाकों (धूर-गोला) की गर्जना द्वारा स्थानीय लोग सवारी की स्थिति का अन्दाजा लगाते हैं (चित्र परिशिष्ट में) और शीघ्रता पूर्वक घरेलू कार्यों को निपटाते हुए, सवारियों के दर्शन हेतु पहुँचते हैं। स्थानीय व्यक्ति गोपाल सरन जी की यह अभिव्यक्ति जनमानस में इस मेले के प्रति उत्साह का बोध कराने वाला है-

आए हैं हजारौं नर नारी इसी लालसा में,
नौमी कूँ निकलै रथ ये ही सुन धाए हैं।

धाए हैं अपने इष्ट मित्रन कूँ संग लिए,
मेला की रौनक देख मन में हरषाए हैं।
मन में हरषाए नित प्रतिदिन की सवारी देख,
सोने और चाँदी के वाहन मन भाए हैं।
भाए हैं रंग नाथ काँच के विमान बीच,
ब्रज में ब्रजवासिन सौं होली खेलन आए हैं।

(गोविन्दशरण)

प्रत्येक उत्सव में कुछ न कुछ संदेश निहित होता है, जो श्री प्रभु की कृपा से किसी विशेष को प्रकाशित अथवा उद्घाटित करता है। इसी प्रकार श्रीब्रह्मोत्सव के अन्तर्गत वाहनों की क्रमबद्धता भी स्वयं में महत्त्वपूर्ण पक्ष समाऐ हुए है। जहाँ आत्मकल्याण की चाहना रखने वालों के लिए सन्मार्ग का अनुभव श्री प्रभु पुण्य कोटि विमान से काँच के विमान में होली खेलने पर्यन्त कराते हैं, वहीं सांसारिक विषयों के प्रति उदासीनता पैदा करने के लिए इनको अनित्यता, अनिश्चितता एवं दु:ख बहुलता का संदेश श्री गज वाहन से प्रारम्भ होता है।

पूर्ण कोठी –

चैत्र मास कृष्ण पक्ष अन्तर्गत सवारी के प्रथम दिन प्रात: काल पूर्ण कोठी में विराजे प्रभु की मनोहारी सवारी निकलती है। हालांकि लोक में यह सवारी पूर्ण कोठी के नाम से प्रचलित हो चली है लेकिन मूल में इसे पुण्य कोटी के नाम से जाना जाता है। इस विमान के माध्यम से प्रभु यह अवगत कराते हैं कि जन्म-जन्मांतर के पुण्यों के फलस्वरूप ही इस उत्सव में सम्मिलित होने का गौरव प्राप्त हुआ है। मान्यतानुसार भगवान का यह स्वर्ण कान्ति युक्त विमान विद्युत की गति से चलने वाला, अनंत ब्रह्माण्डों में सहज रूप से विचरण करने वाला तथा प्रभु की इच्छा से ही भक्तों के लिए प्रत्यक्ष होने वाला है। (चित्र-१) इसके दर्शन रूप से ही मनुष्यों के सभी मनोरथ सहजता पूर्वक पूर्ण होते हैं और मुक्ति की अभिलाषा रखने वालों को भगवान का सान्निध्य प्राप्त होता है। चैत्र कृष्ण पक्ष द्वितीया को निकलने वाली इस सवारी में श्रीगोदारंगन्नार का दर्शन भक्तों को आनन्दित एवं उत्साह से लबरेज कर देने वाला होता है।

सिंह वाहन –

इस दिन सायंकाल श्री प्रभु अकेले ही सिंह पर सवार होकर भ्रमण हेतु निकलते हैं। यह प्रभु के सर्वशक्तिमान रूप का दर्शन है। इसके माध्यम से श्रीप्रभु हमें संदेश देते हैं कि प्राणी भले ही सांसारिक विषयों की चरम सीमा

प्राप्त कर ले, एक दिन अवकाश अवश्यम्भावी है। इस सवारी के दर्शन से मनुष्य अभय प्राप्त करता है। स्वर्ण सिंह पर प्रभु की सवारी का यह दृश्य देखने लायक होता है। (चित्र-२) मान्यता के अनुसार इस सवारी के दर्शन से जहाँ मनुष्य के शत्रु वर्ग का दमन होता है। वहीं भक्ति के समक्ष हिंसक द्वारा हिंसा के परित्याग का भाव दर्शित कराने वाली इस सवारी के दर्शन मात्र से मनुष्य को अतुलनीय यश एवं कीर्ति की प्राप्ति होती है।

सूर्य प्रभा-

श्री ब्रह्मोत्सव के अन्तर्गत सवारी के दूसरे दिन प्रात: बेला में स्वर्ण सूर्य प्रभा के मध्य विराजमान भगवान श्री गोदारंगमन्नार की दिव्य आभा प्राणी मात्र में नव ऊर्जा का संचार करने वाली होती है। सूर्य प्रभा के दर्शन से मनुष्य आरोग्य प्राप्त करता है और श्रद्धालुओं के हृदय में भक्ति का प्रकाश फैलता है। (चित्र-३) सवारी के आगे परम्परागत वाद्य-यंत्रों की स्वर थाप एवं वेदोच्चारण की ध्वनि मानो प्राणी के जीवन में नव ऊर्जा का भाव उदित करते हैं कि हे मनुष्य! तू समस्त बंधनों का त्याग कर मेरी शरण में आ।

हंस वाहन-

दूसरे दिन सायंकाल चाँदी के हंस पर भगवान् की सवारी निकलती है। प्रभु की इस अलौकिक झाँकी के दर्शन से मानव-हृदय में निर्मलता का भाव जाग्रत होता है। हंस-वाहन पर प्रभु की सवारी का भाव यही है कि जब तक मानव मन निर्मल न होगा तब तक उसके हृदय में भक्ति और उसके साथ ही प्रभु के प्रति प्रेम का भाव उदित होना सम्भव नहीं। (चित्र-४) मानव हृदय को निर्मल कर उसमें भक्ति भाव के संचार का संदेश प्रदान करने वाली प्रभु की यह दिव्य सवारी प्राणी मात्र के कल्याण का भाव समाहित किए हुए है।

गरुड़ वाहन-

ब्रह्मोत्सव अन्तर्गत तीसरे दिन चैत्र मास कृष्ण पक्ष चतुर्थी को प्रात:काल स्वर्ण निर्मित गरुड़ वाहन पर प्रभु की सवारी निकलती है। (चित्र-५) गरुड़ जी सेवा एवं भक्ति के प्रतीक हैं। इस सवारी के दर्शन का उद्देश्य प्राणी मात्र को प्रभु का स्मरण कराकर उसका ध्यान प्रभु भक्ति की ओर केन्द्रित करना है। प्रभु का गरुड़ारुढ चिंतन ही मनुष्य को श्री हनुमान जी की भाँति भक्तिभाव प्रदान करने वाला है। वृन्दावन भक्ति की भूमि है, इस सवारी के दर्शन से मनुष्य प्रभु की अहैतुकी कृपा प्राप्त कर भक्ति की ओर उन्मुख होता है।

श्रीहनुमान जी की सवारी एवं छोटी आतिशबाजी–

सवारी के तीसरे दिन सायंकाल स्वर्ण निर्मित सुसज्जित श्री हनुमान जी पर प्रभु की मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी के वेश में सवारी निकलती है। स्वामि भक्ति का संदेश देने वाली भक्त और भगवान् की इस सवारी का दर्शन कर आम जनमानस निहाल हो उठता है। इस सवारी के दर्शन का आशय यह है कि इसके माध्यम से भक्तगण श्री हनुमान जी के सदृश ही प्रभु के सेवक या दास बनने की सौभाग्यमयी सामर्थ्य प्राप्त करते हैं। (चित्र-६) इस दिन सवारी के बड़े बगीचा पहुँचने पर आतिशबाजी का प्रदर्शन किया जाता है। सम्पूर्ण ब्रह्मोत्सव के अन्तर्गत दो आतिशबाजियों का आयोजन किया जाता है। प्रथम तो इस दिन जो आमजन में **छोटी आतिशबाजी** के नाम से विख्यात है तथा दूसरा बड़ी आतिशबाजी का आयोजन जब प्रभु की सवारी स्वर्ण अश्व पर निकलती है। हनुमान जी की सवारी के बड़े बगीचा पहुँचने पर प्रभु के थोड़ी देर विश्राम के बाद रात्रि बेला में छोटी आतिशबाजी के आयोजन का दृश्य बड़ा ही रोमांचकारी होता है जिसमें आतिशबाज अपने उत्कृष्ट हुनर का प्रदर्शन करते हैं। आतिशबाजी का नजारा देखने के लिए स्थानीय जनता के साथ-साथ समीपवर्ती ग्रामीणों के झुण्ड के झुण्ड बड़े उत्साह से इसे देखने आते हैं।

श्रीशेष जी पर सवारी –

श्रीरंग मंदिर में आयोजित श्री ब्रह्मोत्सव परम्परान्तर्गत सवारी निकलने के चौथे दिन रजत निर्मित शेष जी पर प्रभु की सवारी भक्तों को आनन्दित करने वाली होती है। श्री हनुमान जी पर श्री प्रभु के दर्शन-सदृश श्री शेष जी के साथ श्रीप्रभु की अलौकिक आभा का दर्शन भक्तजनों को सेवा-भाव का संदेश देने वाला है। (चित्र-७) शेष जी विराजमान प्रभु श्रीगोदारंगमन्नार की दिव्य झाँकी मानो साक्षात् क्षीर सागर में शेष नाग जी पर शयन करने वाले माता लक्ष्मी सहित श्री विष्णु भगवान के दर्शनों का आनन्द प्रदान करती है।

कल्प वृक्ष–

श्रुति का उद्घोष है 'आनंदी भवामि' जिस प्रकार कल्पवृक्ष देवताओं की मनोकामना पूर्ति कर उनको आनंदित करता है, उसी प्रकार भक्त श्रीप्रभु को अपनी विविध सेवाओं से आनंदित कर स्वयं भी आनंद में डूब जाता है। कल्पवृक्ष की सवारी का यह दर्शन भक्तों को सर्वानंद प्रदान कर नव ऊर्जा का संचार

करने वाला है। चौथे दिन सायंकाल कल्पवृक्ष पर विराजे बाँसुरी हाथ में लिए प्रभु की श्रीकृष्ण के रूप में झाँकी का मनभावन दर्शन होता है। काष्ठ निर्मित प्राचीन परम्परागत कल्पवृक्ष की टहनियों पर विराजमान प्रभु की यह दिव्य सवारी जब श्री रंग मंदिर से आरम्भ होकर बड़ा बगीचा की ओर प्रस्थान करती है तो उनके दर्शनों की एक झलक पाने के लिए श्रद्धालुओं में होड़-सी मची रहती है। (चित्र-८)

पालकी-

कल्प वृक्ष के बाद अगले दिन प्रात:काल ब्रह्मोत्सव के अंतर्गत पालकी की सवारी का आयोजन होता है। चैत्र माह कृष्णपक्ष षष्ठी को श्रीब्रह्मोत्सव अन्तर्गत सवारी के पाँचवें दिन प्रात: मोहिनी रूप में पालकी में विराजमान प्रभु की सवारी निकलती है। (चित्र-९) रजत निर्मित इस पालकी को श्रद्धालु जन अपने कन्धों पर उठाकर बड़े बगीचा सहित अन्यान्य निर्धारित स्थानों पर अमृत वितरण हेतु जाते हैं। सम्प्रदाय के स्थानों, बगीचों में इस दिन प्रभु का पूजन-अर्चन, अमृत वितरण आदि मनोरथ होते हुए पालकी अपराह्न पुन: मंदिर में प्रवेश करती हैं।

सिंह शार्दूल-

पाँचवें दिन सायंकाल भगवान की सवारी स्वर्ण निर्मित सिंह शार्दूल पर निकलती है। कहते हैं इस प्रकार का जीव प्रकृति में सतयुग में होता था। पक्षियों की भाँति आकाश में विचरण करने वाले उस काल के इन विचित्र सिंह-शार्दूलों की परिकल्पना यहाँ देखी जा सकती है। (चित्र-१०) सिंह का सा मुख, हाथी जैसी सूँड़ एवं विशालतम शरीर पर मजबूत पंखों के सहारे यह हाथी के बच्चे को भी ले उड़ते थे। ऐसे भयंकर जीवों को भी अपने उपयोग की वस्तु बनाकर प्रभु अपने सर्वव्यापक स्वरूप को प्रकट करते हुए भक्तों को अभय प्रदान करते हैं। ब्रह्मोत्सव के अन्तर्गत इस सवारी के दिन भी सिंह शार्दूल की परिकल्पनानुसार एक हाथी का बच्चा उसकी सूँड़ में लटका देखा जा सकता है। भगवान की सवारी का यह अनूठा दृश्य श्रद्धालुओं को रोमांचित करने वाला होता है।

काँच का विमान (होली)-

ब्रह्मोत्सव के अन्तर्गत सवारी के छठे दिन काँच के सुसज्जित परम्परागत विमान में होली खेलते हुए प्रभु की सवारी निकलती है। **'नेषाजनं स्मरत इदं शरीरं'** श्री बैकुण्ठ धाम में आनन्दानुभूति की चरम सीमा प्राप्त कर भक्तगण श्री प्रभु के रंग में ही रंग जाते हैं। वृन्दावन में होली के आयोजन के पश्चात् श्रीब्रह्मोत्सव के

अन्तर्गत काँच के विमान में बैठे प्रभु की अबीर, रंग, गुलाल उड़ाते प्रभु की यह सवारी माहौल को एक बार पुन: होली के रंग से सराबोर कर देती है। (चित्र-११) प्रभु की सवारी के साथ गुलाल एवं रंग उड़ाते मंदिर के पुजारी और पीछे बैलगाड़ी में परम्परागत बड़ी-बड़ी नाद एवं भारी-भरकम कलशों में विविध प्रकार के रंग जिनसे सवारी के दौरान छोटे पात्रों में रंग निकालकर श्रद्धालुओं पर रंग डाला जाता है। जग प्रसिद्ध ब्रज की होली के तुरन्त बाद श्रीरंग मंदिर में आयोजित इस ब्रह्मोत्सव की इस अद्‌भुत परम्परा से देशी-विदेशी श्रद्धालु रससिक्त हो कह उठते हैं-"**एसो रस बरस रह्यौ वृन्दावन तीन लोक में नॉय।**"

हाथी की सवारी-

इस दिन सायंकाल सोने के हाथी पर सवार होकर प्रभु भ्रमण हेतु निकलते हैं। इस सवारी के माध्यम से प्रभु सांसारिक विषयों के प्रति उदासीनता का संदेश देते हैं। मान्यतानुसार अयोध्या नरेश श्री दशरथ प्रभु श्रीराम को युवराज बनाने की इच्छा से श्री कौशल्या के समक्ष प्रस्तुत करते हैं एवं अयोध्या के जनमानस की अभिलाषा भी यही होती है कि युवराज श्रीराम ही शत्रुंजय नामक विशेष गज, जिस पर बैठने का अधिकार सिर्फ युवराज को ही होता है, पर विराजें। इस प्रकार यह मनोरथ जनेच्छा का भी प्रतीक है। अयोध्या की जनता, महाराज दशरथ एवं महर्षि वशिष्ठ आदि की सहमति से श्रीप्रभु शत्रुंजय गज पर विराजते हैं। इस प्रकार इस लीलानुकरण में छत्र से आवृत मुखारविन्द विभूषित श्रीप्रभु स्वर्ण गज पर विराजमान होकर दर्शन देते हैं। प्रभु का यह दिव्य स्वरूप उनके अतुल्य वैभव का दर्शन कराता है। सोने के हाथी पर विराजमान प्रभु और उनके पीछे बैठकर चँवर डुलाता सेवक तथा आगे की ओर परम्परागत वाद्य यंत्रों की स्वर लहरियाँ एवं वेद पाठ वातावरण को भव्यता प्रदान करते हैं। (चित्र-१२) मान्यतानुसार इस सवारी के दर्शन से मनुष्य प्रभु का शरणागत हो, वैभव एवं यश की प्राप्ति करता है।

रथ की सवारी-

दस दिवसीय ब्रह्मोत्सव का प्रमुख आकर्षण रथ की सवारी है। लगभग ४० फुट ऊँचे लकड़ी से बने इस कलात्मक रथ पर श्रीगोदारंगमन्नार के गगनभेदी जयघोषों के मध्य जब नवमी के दिन प्रभु की सवारी आरम्भ होती है तो यह दृश्य देखने लायक होता है। रथ को भारी-भरकम मोटे रस्से के सहारे खींचा जाता है। (चित्र-१८) रस्सा पकड़ने के लिए श्रद्धालुओं में होड़-सी

मची रहती है। रथ में विराजमान प्रभु के दर्शन एवं रथ को खींचने की अभिलाषा लेकर हजारों की संख्या में ग्रामीण एवं आसपास के क्षेत्रों से श्रद्धालुजन यहाँ पहुँचते हैं। रथ की सवारी प्रात:काल श्री रंग मंदिर से आरम्भ होकर अपराह्न रंग जी के बगीचे जो बड़ा बगीचा भी कहलाता है पर पहुँचती है। रथ के अग्र भाग पर श्वेत वर्ण के अलंकृत चार काष्ठ अश्व जुते रहते हैं जिन्हें रजत आभूषणों से सुसज्जित किया जाता है। (चित्र-१५) इस विशालतम रथ में नीचे की ओर उत्कृष्ट काष्ठ कला इसकी कलात्मकता एवं कारीगरों के कला कौशल का भान कराती है। भारी-भरकम यह विशाल रथ ठोस लकड़ी के मजबूत लगभग ५ फुट व्यास वाले पहियों के सहारे टिका रहता है। रथ के पहियों एवं अश्वों के मध्य भाग में नीचे की ओर सुन्दर काष्ठ अलंकरण के मध्य रथ के वाहक देवता (रथ को धारण करने वाले) यक्ष एवं गन्धर्व तथा निर्धारित स्थानों पर विश्वकर्मा चार अश्व उच्चैश्रवा, सिंहशार्दूल एवं द्वारपाल जय विजय विराजमान रहते हैं। (चित्र-१६) जिसके ऊपर भगवान का सिंहासन रहता है। रथ की सवारी के आयोजन से पूर्व '**रथ घर**' में खड़े रथ की सम्पूर्ण जाँच भली प्रकार कर ली जाती है ताकि आयोजन के समय किसी प्रकार का व्यवधान उत्पन्न न हो। (चित्र-२२) इस अवसर पर रथ को भली प्रकार सुन्दर ध्वज पताकाओं से सुसज्जित किया जाता है। रथ में प्रभु के समीप बाहर की ओर दो सिंह की आकृति के दानव खड़े किए जाते हैं। मान्यता के अनुसार यह प्रभु के समक्ष इसलिए स्थापित होते हैं कि प्रभु को नजर न लगे। (चित्र-१३) ब्रह्मोत्सव के अन्तर्गत रथ की सवारी वाले दिन स्थानीय एवं समीपवर्ती ग्रामीणों का उत्साह देखते ही बनता है। आस-पास के ग्रामीणों के समूह के समूह रथ को खींचने एवं प्रभु के दर्शनों की एक झलक पाने को लालायित दिखते हैं। श्रीरंग मंदिर की ब्रह्मोत्सव परंपरा में रथ का मेला शुरू से ही इस महा उत्सव का केन्द्र बिन्दु रहा है। तत्कालीन ब्रिटिश कलेक्टर एफ.एस.ग्राउस द्वारा सन् १८८३ में प्रकाशित 'मथुरा ए डिस्ट्रिक्ट मेमोयर' के द्वितीय संस्करण में प्रकाशित इस रथ का चित्र इस मेले की तत्कालीन भव्यता को दर्शाने वाला है। (चित्र-४५) यह रथ के मेले का आकर्षण ही है कि इस अवसर पर स्थानीय जनमानस जहाँ स्वयं इस मेले में सम्मिलित होने हेतु उत्साहित रहता है वहीं ये लोग अपने सगे संबंधियों को भी मेला देखने हेतु आमंत्रित करते हैं और इन रिश्तेदारों के साथ सपरिवार मेले का भरपूर आनन्द लेते हैं-

आय गयौ मेला अब रथ कौ सुन आली री,
देखूँगी सवारी जाय मैं भी रंग नाथ की।
चंदन कौ रथ जामें झल्लर और घण्ट बँधे,
दीनौं है बनाय क्या ही कारीगरी हाथ की।

नौमी कूँ निकलै रथ, जहाँ हजारन की भीड़ होय,
और दशमी कूँ आतिशबाजी चलै करामात की।
लै चल अब सखी री मोय पल भर न चैन पड़े,
देखूँगी अदा की बाँकी झाँकी रंगनाथ की।
झाँकी रंगनाथ की मन में समाय गई,
भूली सब खानपान खोई सुध गाथ की।
गाथ की न चिन्ता मोहि चिन्ता बस एती रही,
छोड गई अकेली मोहे मेरी संग साथ की।
संग मैं न लै गई मैंने बहुत ही खुशामत करी,
एक हूँ न मानी आज उन्नैं मुझ अनाथ की।
व्याकुल हैं नैंन बिन देखे न अब पडै चैन,
रंग जी के बागन में, सवारी रंगनाथ की।

(गोविन्दशरण)

अपराह्न रथ के बड़ा बगीचा पहुँचने पर प्रभु के थोड़ी देर विश्राम के उपरान्त सवारी पुनः मंदिर की ओर प्रस्थान करती है। (चित्र-१४) रथ में विराजमान प्रभु के मंदिर पहुँचने पर यहाँ परिसर में रंगीन फुव्वारों का आयोजन किया जाता है, जिनकी अद्‌भुत छठा देखते ही बनती है।

रथ-संचालन एवं प्रयुक्त सामग्री-

इस विशालतम रथ का संचालन अत्यन्त सावधानी पूर्वक विशेषज्ञों की निगरानी में होता है। रथ खींचते समय ये लोग कुशलतापूर्वक अपने दायित्वों का निर्वहन करते हैं। मेले का अपार जन सैलाब एवं बैंड-बाजों की तीव्र ध्वनि के मध्य रथ को आगे बढ़ाना एक दुष्कर कार्य होता है। ऐसे में आयोजकों द्वारा रथ के चारों ओर मजबूत रस्से का घेरा बनाकर उसे व्यवस्थित रखने का दायित्व चयनित लोगों को दिया जाता है, जो रथ के चारों ओर कुछ दूरी बनाकर रस्से का यह गोल घेरा मजबूती से बनाए रहते हैं ताकि अनाधिकृत व्यक्ति अन्दर प्रवेश न पा सकें और रथ के संचालन में फानी एवं डाट लगाने वाला समूह सुगमतापूर्वक अपना कार्य कर सके। ऐसे में इन लोगों ने रथ को आगे बढ़ाने एवं रोकने की प्रक्रिया के लिए कूट संकेत भी बना रखे हैं जिससे रथ के संचालन में लगे दोनों वर्ग (फानी एवं डाट के माध्यम से रोकने वाला तथा रस्से के मध्य रथ को खींचने वाला जनसमूह) परस्पर सामंजस्य से रथ को आगे की ओर बढ़ाते हैं। रथ की सवारी के दौरान भगवान गोदारंगमन्नार की जै, परम्परागत पैंपनी (पीपनी) की आवाज एवं हाथ के इशारों आदि संकेतों को समझ ये लोग

आसानीपूर्वक अपने कार्य को करते हैं। रथ संचालन की प्रक्रिया में दो टोली अलग-अलग कार्य करती है। एक तो रथ को रस्से के सहारे खींचने वाला असंख्य लोगों का समूह और दूसरा उसकी गति को फानी एवं डाट से नियंत्रित तथा रथ को संतुलित रखने वाली टोली। दोनों टोलियों के परस्पर सामंजस्य से ही भारी-भरकम यह रथ कुशलतापूर्वक आगे बढ़ता है। चूँकि रथ को खींचने में लगा श्रद्धालुओं का हुजूम पूरे वेग से उसे आगे की ओर खींचता है जिससे उसके संतुलन बिगड़ने का भय रहता है वहीं रथ के पहियों फानी के पास लगे विशेषज्ञ ''फानी'' (एक प्रकार का लकड़ी का औजार) एवं बल्ला के सहारे उसका संतुलन बनाते हैं। रथ का पहिया फानी के ऊपर से कूदे नहीं इस कारण तुरन्त ही विशेषज्ञों द्वारा बल्ला (लकड़ी का एक बड़ा मजबूत गोल तना) का प्रयोग किया जाता है। (चित्र-१७) रथ में अत्यधिक वजन होने के कारण पहियों से फानी के दबने या चिपकने का खतरा न बने इसलिए तेल की व्यवस्था साथ ही रहती है लेकिन फिर भी रथ के संचालन के समय वजन के कारण फानियाँ कभी-कभी टूट भी जाती हैं ऐसे में अनेक फानियाँ सवारी के साथ ही रिक्शे में रखकर ले जायी जाती हैं ताकि सवारी में व्यवधान न हो। (चित्र-१९-२०) पहियों के पीछे फानी लगाते समय सरसों के तेल का पीपा साथ ही रहता है जिसमें से तेल निकालकर मिट्टी की छोटी मलरिया में डाला जाता है और फिर इस मलरिया से आवश्यकतानुसार फानी में। मिट्टी की यह मलरिया एक व्यक्ति डोरी में लटकाए उसे साथ-साथ लेकर चलता है। (चित्र-२१) मंदिर से बगीचे एवं यहाँ से पुनः मंदिर तक पहुँचने में प्रायः एक पीपा या कभी-कभी उससे अधिक तेल भी खर्च होता है। अपराह्न रथ के बड़े बगीचा पहुँचने पर प्रभु के थोड़ी देर विश्राम एवं पूजन-अर्चन के उपरान्त सवारी पुनः मंदिर की ओर प्रस्थान करती है एवं रथ को मंदिर के बाहर बने विशाल रथ घर में खड़ा किया जाता है।

रंगीन फुव्वारों का आयोजन-

रथ यात्रा के बाद सवारी के मंदिर लौटने पर सायंकाल रंगीन फुव्वारों का आयोजन किया जाता है। रथ की यात्रा के उपरांत भगवान गोदारंगमन्नार मंदिर परिसर में स्थित बगीचे में थोड़ी देर विश्राम करते हुए आकर्षण फुव्वारों के मध्य भक्तों को दर्शन देते हैं। (चित्र-२३) मंदिर परिसर में स्थित इस बगीचे में रंगीन फुव्वारों के आयोजन की यह परंपरा पुरानी है। यहाँ इन फुव्वारों के लिये बनी व्यवस्था उस काल के वैभव का दर्शन कराने वाली है।

घोड़ा पर सवारी-

श्री ब्रह्मोत्सव में सवारी के आठवें दिन सायंकाल स्वर्ण अश्व वाहन पर

विविध अलंकरण एवं शस्त्रों से सज्जित प्रभु का दिव्य स्वरूप मानो उनके शौर्य एवं पराक्रम का अनुभव कराता है। प्रभु के एक हाथ में रजत निर्मित भाला तथा दूसरे में घोड़े की लगाम, पीठ पर ढाल, कमर पर कसी अलंकृत मूठदार तलवार और रत्नजड़ित जूतियाँ उनकी अलौकिक आभा का दर्शन कराते हुए भक्तों आनंदित करती है। (चित्र-२४) परंपरागत वाद्ययंत्रों की स्वर लहरियों से इस अद्‌भुत झाँकी का नयनाभिराम दृश्य उस समय और अधिक सजीव हो उठता है, जब यह सवारी श्री रंग मंदिर के विशाल मुख्य दरवाजे से बाहर की ओर निकलती है। जिसे देख प्रथम दृष्ट्या तो ऐसा दृश्य उपस्थित होता है कि मानो प्रभु अश्व की लगाम कसे एक योद्धा के रूप में किसी दुर्ग से प्रस्थान कर रहे हों।

बड़ी आतिशबाजी-

घोड़े पर विराजमान प्रभु की सवारी के बड़ा बगीचा पहुंचने पर वहाँ निर्धारित भव्य परिसर में उनका पूजन-अर्चन परंपरागत विधि-विधान से किया जाता है। (चित्र-२५) तत्पश्चात थोड़ी देर विश्रामोपरांत सवारी पुनः 'बड़ा बगीचा' के मुख्य द्वार पर आती है। प्रभु के यहाँ आगमन पर आतिशबाजी का रोमांचकारी प्रदर्शन आरंभ होता है। जिसमें नामी गिरामी आतिशबाज अपने हुनर का प्रदर्शन करते हुए विविध करतब दिखाते हैं। (चित्र-२६, २७, २८) प्रदर्शन के दौरान जब आतिशबाज अपनी प्रतिभा का कौशल दिखाते हुए आकाश में माला का दृश्य उपस्थित करते हैं जो प्रभु के अर्पण निमित्त होती है तो लोगों की दृष्टि आकाश की ओर टिक जाती है। इसके बाद आतिशबाजी में एक से बढ़कर एक-किला, हनुमानजी, मोर, सतिया (स्वस्तिक), गज ग्राह युद्ध, चकई तथा रोशनी आदि का श्रेष्ठतम प्रदर्शन जनसमूह को निरंतर रोमांचित किये रहता है। लगभग डेढ़ से दो घंटे की आतिशबाजी के बाद सवारी बगीचे से पुनः मंदिर की ओर प्रस्थान करती है।

परकाल स्वामी लीला-

परंपरागत मार्ग पर निकलने वाली सवारियों से इतर, आतिशबाजी के उपरांत इस मनोरथ का आयोजन मंदिर परिसर में होता है। इस आयोजन के प्रति सबसे अधिक कौतूहल छोटे बच्चों और इस मनोरथ से अनभिज्ञ लोगों में देखा जा सकता है। अटपटे परिधान पहने भील, किसी के गले में नाना प्रकार की सब्जियों की माला तो कोई मजबूत रस्से से बँधा अनियंत्रित विशालकाय भील, कोई पत्थर लेकर भागता हुआ तो कोई कनस्तर बजाता हुआ वहीं दूसरा

उसके पीछे से जोरदार अट्टहास करता हुआ, तरह-तरह की उछल-कूद और नाना प्रकार की विचित्र आवाजें जिन्हें देख छोटे बच्चे सहम से जाते हैं लेकिन वे अभिभावकों के साथ दुबक कर इन्हें देखे बिना भी नहीं मानते। (चित्र-३१-३४) बच्चों की तो बात ही क्या स्वयं बड़े समझदार व्यक्ति भी इन दृश्यों को बस देखते ही रह जाते हैं। घोड़ा की सवारी का आरंभ से लेकर आतिशबाजी तक का आनंद लेने वाले थके हारे लोग भी मानो इन विविध कौतूहल को देख अपनी थकान को भूल उत्साह से लबरेज हो उठते हैं। मनोरथ के अनुसार नाना प्रकार की विचित्र वेशभूषा धारण किये ये भील महान भक्त परकाल स्वामी के सेवकों के रूप में प्रभु को लूटने की लीला का परम्परागत अनुकरण करते हैं। (चित्र-२९, ३०) पौराणिक प्रसंग के अनुसार कलियुग के २०७ वर्ष बीतने पर इनका जन्म हुआ था। परकाल स्वामी चोल देश के राजा के सेनापति थे। परकाल स्वामी नाम इन्हें साक्षात नारायण प्रभु की कृपा स्वरूप प्राप्त हुआ था। परिरम्भपुरी निवासी परकाल स्वामी अपनी प्रतिभाओं के बल पर चोल देश के सेनापति पद पर आसीन रहे। एक बार उन्होंने किसी कारण विशेष से यह संकल्प लिया कि मैं एक वर्ष तक प्रतिदिन एक हजार वैष्णव सन्तों को भोजन कराकर श्री पद तीर्थ (चरण जल) ग्रहण करूँगा। अपने इस कार्य को उन्होंने निष्ठा पूर्वक सुचारू रखा किन्तु संकल्प के आखिरी समय में इस व्यवस्था को बनाए रखने में अनेक श्रम करने पड़े। भगवान भक्त की कड़ी परीक्षा लेते हैं और परीक्षणोपरान्त ही अपनी कृपा दृष्टि भक्तों पर बरसाते हैं। परकाल स्वामी का खजाना खाली हुआ, जागीरें जाती रहीं, अन्यान्य स्रोतों खाली होने एवं कहीं से धनागमन न होता देख वे परेशान हो उठे और उन्होंने संकल्प पूर्ति के निमित्त वैष्णवों की भोजन व्यवस्था के लिए राहजनी एवं लूट का मार्ग अपनाया और धनी सेठ, साहूकारों को लूटकर वैष्णवों की सेवा करने लगे ऐसी घटनाओं को देख लोगों ने उस राह से निकलना ही छोड़ दिया। परकाल स्वामी जी को पुनः चिन्ता सताने लगी कि अब क्या होगा? वैष्णवों की सेवा किस प्रकार होगी? और वे थक हारकर प्रभु को स्मरण करने लगे। प्रभु को तो मानो बस इसी क्षण की प्रतीक्षा थी और वे तत्काल सेठ- सेठानी का वेश धारण कर परकाल सूरी के ठिकाने की ओर चल पड़े। दूर से सेठ- सेठानी को आता देख परकाल स्वामी अपने साथियों सहित उन्हें घेर कर खड़े हो गये और उनसे आभूषण देने को कहा। एक -एक करके प्रभु ने अपने सभी आभूषण उन्हें प्रदान कर दिये। माल आता देख परकाल स्वामी प्रसन्न हो उठे। प्रभु तो अर्न्तयामी हैं वे तो बस अपने भक्त की इस अनूठी भक्ति से प्रसन्न थे और उन्हें अपनी शरणागत करना चाहते थे।

प्रभु ने इशारे में गोदाम्मा जी से पैर का रत्न जड़ित बिछिया छिपाने को कहा लेकिन परकाल स्वामी से भला आभूषण कहाँ छिपते? बिछिया की ओर उनकी दृष्टि जाते ही उन्होंने तत्काल उसे भी उतारने को कहा। इस पर माता गोदाम्मा जो

सेठानी के वेश में थी बोली अरे! मेरे से यह नहीं उतरता। प्रत्युत्तर में परकाल स्वामी ने कहा शीघ्रतापूर्वक निकालो अन्यथा तुम्हें हानि होगी। माता ने पुनः कहा अगर तुम्हें आवश्यकता है तो तुम्हीं निकाल लो। पैरों से आसानी पूर्वक बिछिया न निकलने पर परकाल स्वामी उनके चरणों की ओर झुककर उसे खोलने का यत्न करने लगे। उनके झुकते ही, भगवान तो मानो यही सोच रहे थे, उन्होंने तुरन्त परकाल सूरी के समक्ष अपना दिव्य स्वरूप प्रकट किया और उन्हें अपना शरणागत बनाया। ऐसी लीलाओं के द्वारा अपने भक्तों पर कृपादृष्टि बनाने की प्रभु की यह रीति अनूठी एवं विचित्र है। श्री ब्रह्मोत्सव के अन्तर्गत अश्व की सवारी के उपरान्त इसी लीला का अनुकरण होता है।

पालकी में सवारी एवं यमुना स्नान मनोरथ –

श्री ब्रह्मोत्सव परम्परा में सवारी के नवें दिन श्रवण नक्षत्र में पालकी में विराजमान भगवान श्री गोदारंगमन्नार के यमुना स्नान हेतु सवारी का आयोजन होता है। (चित्र-३५-४१) प्रभु की पालकी में लगे उत्साही श्रद्धालु जन भगवान के जयकारों एवं वेदोच्चारण के मध्य पालकी को यमुना जी की ओर ले जाते है। इस दिन प्रणय कलह लीला जिसे स्थानीय लोग गेंद बच्ची कहते हैं का आयोजन होता है । प्रसंगानुसार एक बार रात्रि में जब प्रभु किसी भक्त की सहायतार्थ जाते हैं और प्रातः गोदाम्मा जी को उनका दर्शन नहीं होता तो वह नाराज होती है। प्रणय कलह का अर्थ है प्रेम का झगड़ा गोदाम्मा जी को प्रसन्न करने हेतु प्रभु पुष्प से बनी गेंद गोदाम्मा जी की ओर फेंकते हैं। इस पर भी जब गोदाम्मा जी प्रसन्न नहीं होती तो वे सुसज्जित नव परिधान पहन-पहन कर उन्हें दिखाते हैं। आखिर में गोदाम्मा जी के कहने पर प्रभु यमुना स्नान को जाते हैं। तब कहीं जाकर यह प्रेम का झगड़ा समाप्त होता है।

मंदिर परिसर में इसका लीलानुकरण बरबस ही श्रद्धालुओं को अपनी ओर आकर्षित करता है। और वे प्रभु के ऐसे मनोरथों को देख रससिक्त हो उठते हैं। मंदिर की परिक्रमा में तथा अन्दर द्वार पर प्रभु के वस्त्र बदलने तथा गेंद बच्ची (गेंद फेंकने का खेल) आदि दृश्यों की छठा बस देखते ही बनती है। मंदिर में आयोजित इस प्रणय-कलह मनोरथ में गेंद लीला के समय कपाट के अन्दर की ओर माता गोदाम्मा तथा बाहर की ओर प्रभु की पालकी होती है। पालकी में बैठे प्रभु अन्दर जाने का प्रयास करते हैं। लेकिन गोदाम्मा जी की तरफ से द्वार बन्द कर दिये जाते हैं। यह क्रम कई बार होता है। इस दौरान पाँच बार पुष्प गुच्छ (फूलों से बनी गेंद) फेंकी जाती है (चित्र-३७, ३८) तथा इससे पूर्व पालकी में बैठे प्रभु की सवारी में सात बार प्रभु के वस्त्र बदलने की लीला का

अनुकरण परिक्रमा में होता है जिसमें पालकी आगे पीछे होती रहती है। आखिर में मंदिर के आचार्य माता गोदाम्मा को समझाते हुए प्रभु को क्षमा किये जाने की प्रार्थना करते हैं। इस दिन यमुना स्नान जिसे यज्ञान्त स्नान भी कहते हैं का आयोजन किया जाता है।

चन्द्रप्रभा –

प्रणय-कलह अनन्तर समाधान, शीतलता एवं शांति प्रदान करता है। अत: प्रिया-प्रियतम शीतलता के प्रतीक चन्द्रवाहन में दर्शन देते हैं एवं इसके माध्यम से भक्तजनों को अवगत कराते हैं कि लक्ष्य की ओर बढ़ते चलो, विरोध की चिन्ता न करो, विरोध स्वर तुम्हारे लक्ष्य की ओर बढ़ते कदम से स्वयं शांत हो जाएंगे और तुम शीतलता व शांति का अनुभव करोगे। यमुना स्नान मनोरथ के बाद सायंकाल चन्द्रप्रभा में विराजमान गोदारंगमन्नार दिव्य दम्पति की सवारी का दृश्य चन्द्रमा की धवल चाँदनी में प्रभु के रास का दृश्य उपस्थित करता है। (चित्र-४२) प्रणय-कलह के बाद प्रभु का यह दिव्य मनोरथ बड़े हर्षोल्लास से आयोजित किया जाता है। मान्यता के अनुसार चन्द्र प्रभा के दर्शन से मनुष्य की चंचलता का क्षय होता है। और उसके मन को दिव्य शान्ति प्राप्त होती है।

पुष्प विमान –

श्री ब्रह्मोत्सव के समापन अवसर पर रात्रि में पुष्प विमान पर प्रभु की सवारी निकलती है। (चित्र-४३) नाना प्रकार के पुष्पों से सज्जित विमान पर विराजमान प्रभु का पूजन-अर्चन विधि विधान पूर्वक किया जाता है। यह मनोरथ द्वादश आराधन भी कहलाता है। विविध प्रकार के फूलों से अलंकृत इस विमान में विराजमान प्रभु रात्रि में भक्तों को दर्शन देते हैं। इस दिन बारह तरह के भोग लगाए जाते हैं, बारह आरतियाँ होती हैं तथा पुष्पों से अर्चना की जाती है। श्री ब्रह्मोत्सव के दौरान प्रभु के समक्ष किसी प्रकार के अपराध, भोग प्रसाद में विलम्ब आदि के लिए प्रभु से क्षमा प्रार्थना भी किए जाने की परम्परा है।

श्रीरंग मन्दिर ब्रह्मोत्सव

र्ण कोठी में विराजमान प्रभु की दिव्य सवारी का दृश्य
चित्र-१ (पृष्ठ–७)

सिंह पर विराजमान प्रभु की सवारी
चित्र–२ (पृष्ठ–७)

र्य प्रभा के मध्य विराजमान प्रभु की अद्‌भुत झाँकी
चित्र-३ (पृष्ठ-८)

हंस पर प्रभु की सवारी का मनोरम दृश्य
चित्र-४ (पृष्ठ-८)

श्रीरंग मन्दिर ब्रह्मोत्सव

श्रीब्रह्मोत्सव अन्तर्गत श्री गरूड़ जी पर विराजमान प्रभु की झाँकी
चित्र -५ (पृष्ठ -८)

श्री हनुमान जी पर प्रभु की सवारी का दृश्य
चित्र - ६ (पृष्ठ-९)

श्री शेषजी पर विराजमान प्रभु
चित्र -७ (पृष्ठ-९)

कल्पवृक्ष पर श्री विग्रह के दर्शन श्री कृष्ण-रूप
चित्र - ८ (पृष्ठ-१०)

श्री रंग-मंदिर 'ब्रह्मोत्सव'

पालकी में विराजमान
प्रभु की झाँकी

श्रीब्रह्मोत्सव के अन्तर्गत रजत पालकी में सवारी का दृश्य
चित्र - ९ (पृष्ठ-१०)

सिंहशार्दूल पर प्रभु की सवारी का दृश्य
चित्र-१० (पृष्ठ-१०)

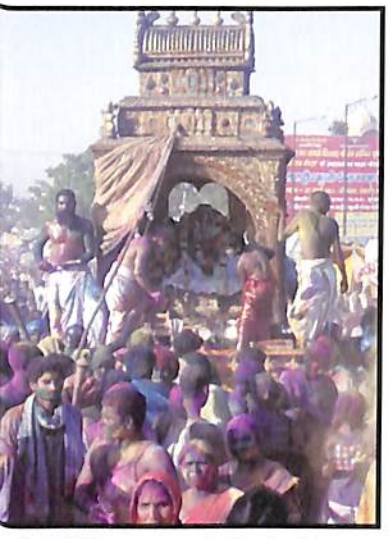

काँच के विमान पर होली खेलते प्रभु
चित्र- ११ (पृष्ठ-१०)

स्वर्ण हाथी पर श्री विग्रह की सवारी का दृश्य
चित्र-१२ (पृष्ठ- ११)

श्री रंग-मंदिर 'ब्रह्मोत्सव'

प्रभु को नजर न लगने हेतु रथ में प्रयुक्त उनके समक्ष रखे जाने वाला दानव, चित्र-१३ (पृष्ठ-१२)

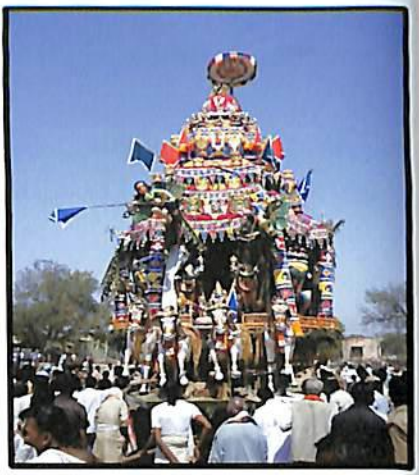

रथ की सवारी का दृश्य, चित्र-१४ (पृष्ठ-१३)

रजत आभूषणों से अलंकृ
रथ के अग्र भाग में जुते
काष्ठ अश्व
चित्र-१५ (पृष्ठ-१२)

रथ के अग्रभाग के नीचे की ओर स्थापित
वाहक देवता, मान्यतानुसार
जिन पर रथ के संचालन का भार रहता है
चित्र-१६ (पृष्ठ-१२)

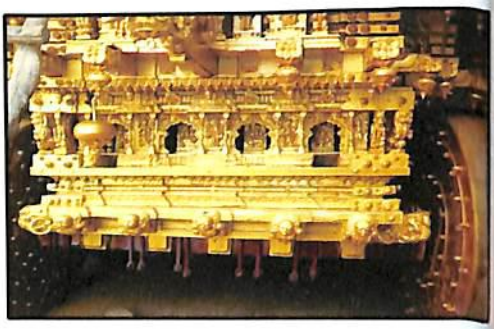

श्री रंग-मंदिर 'ब्रह्मोत्सव'

पहिए को बल्ला के सहारे आगे बढ़ाते विशेषज्ञ चित्र-१७ (पृष्ठ-१४)

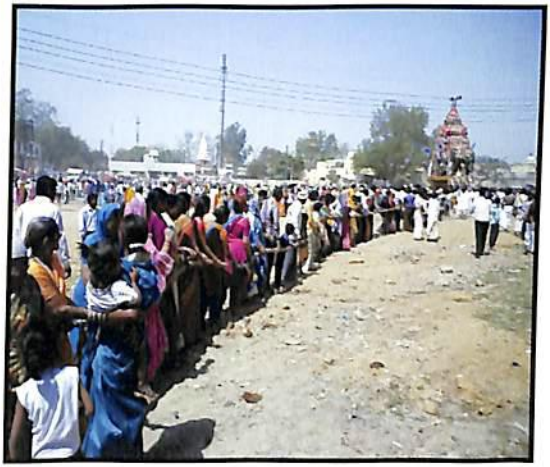

सवारी के दौरान रस्से के सहारे रथ को खींचता जनसमुदाय चित्र १८ (पृष्ठ-११)

पहिए के नीचे फानी का प्रयोग करते विशेषज्ञ चित्र -१६ (पृष्ठ-१४)

रिक्शे में रखी फानियाँ चित्र-२० (पृष्ठ-१४)

श्री रंग-मंदिर 'ब्रह्मोत्सव'

रथ के संचालन हेतु प्रयुक्त फानी में मलरिया से तेल डालता युवक, चित्र-21 (पृष्ठ-१४)

वाहन घर में खड़ा रथ
चित्र–२२ (पृष्ठ–१२)

रथ की सवारी के उपरान्त मंदिर परिसर में स्थित उद्यान में रंगीन फव्वारों का दृश्य चित्र-२३ (पृष्ठ-१४)

श्री रंग-मंदिर 'ब्रह्मोत्सव'

एक हाथ से स्वर्ण अश्व की लगाम थामे तथा दूसरे हाथ में रजत निर्मित भाला लिए प्रभु की सवारी का मनोहारी दृश्य चित्र-२४ (पृष्ठ-१५)

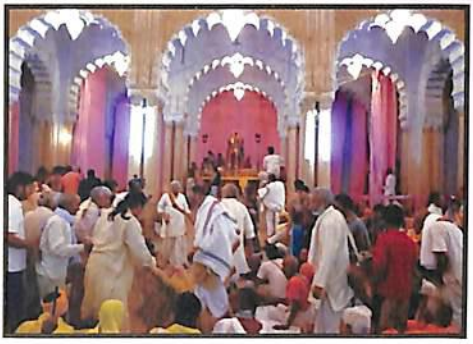

सवारी के बड़ा बगीचा पहुँचने पर आतिशबाजी से पूर्व पूजन-अर्चन का दृश्य चित्र - २५ (पृष्ठ-१५)

आकाश में आतिशबाजी का भव्य नजारा, चित्र -२६(पृष्ठ-१५)

सुरक्षा घेरा के बाहर आतिशबाजी का आनन्द लेता जन समुदाय चित्र - २७ (पृष्ठ-१५)

बड़े बगीचा के मुख्य दरवाजे पर सवारी के समक्ष रोशनी का दृश्य चित्र-२८ (पृष्ठ-१५)

श्री रंग-मंदिर 'ब्रह्मोत्सव'

सवारी के मंदिर लौटने पर परकाल स्वामी लीलानुकरण का दृश्य चित्र- २९ (पृष्ठ-१६)

घोड़े पर बैठे श्री परकाल स्वामी चित्र- ३० (पृष्ठ-१६)

लीला के कुछ अन्य दृश्य चित्र ३१ (पृष्ठ १६)

चित्र-३२ (पृष्ठ-१६)

चित्र-३३ (पृष्ठ-१६)

चित्र-३४ (पृष्ठ-१६)

श्री रंग-मंदिर 'ब्रह्मोत्सव'

यमुना-स्नान हेतु पालकी की सवारी का दृश्य
चित्र-३५ (पृष्ठ-१७)

पालकी में प्रभु की अर्चना करता पुजारी
चित्र-३६ (पृष्ठ-१७)

गेंद गुच्छी (प्रणय-कलह) लीला के दृश्य एवं गेंद पकडने को लालायित श्रद्धालु
चित्र-३७ (पृष्ठ-१७)

चित्र-३८ (पृष्ठ-१७)

पालकी में प्रयुक्त बैसाखी
चित्र-३९ (पृष्ठ-१७)

पालकी में विराजमान
श्री विग्रह
चित्र-४० (पृष्ठ-१७)

पालकी का प्रष्ठ भाग
चित्र-४१ (पृष्ठ-१७)

श्री रंग-मंदिर 'ब्रह्मोत्सव'

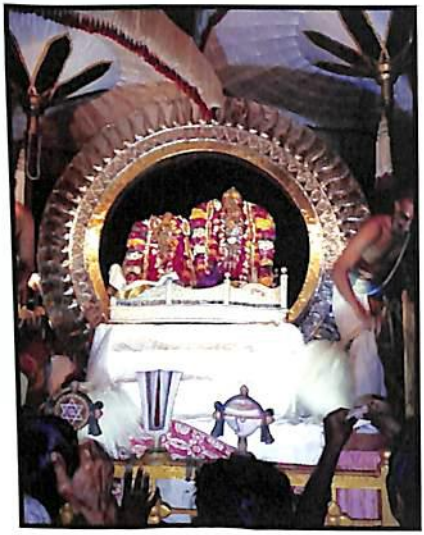

रजत निर्मित चन्द्रप्रभा में विराजमान
श्री विग्रह की सवारी का दृश्य चित्र-४२ (पृष्ठ-१८)

पुष्प विमान विमान में दर्शन देते प्रभु
चित्र-४३ (पृष्ठ-१८)

रानी कमल कुँवरि द्वारा रचित "वृन्दावन वासिन की वंदना महात्म्य"
ग्रन्थ में उल्लिखित श्री रंग मंदिर का विवरण, चित्र -४४ (पृष्ठ-४)

श्री रंग-मंदिर 'ब्रह्मोत्सव'

परिशिष्ट

श्रीब्रह्मोत्सव के अन्तर्गत मंदिर की सजावट का दृश्य

सवारियों में प्रयुक्त छत्र

सवारी के दौरान प्रयुक्त मशाल में रजत कुप्पी से तेल डालते संत

सवारी के साथ चलने वाले प्रतीक चिन्ह

मनोरथ के दौरान वाद्ययंत्र बजाते कलाकार

प्रभु को धूप-ताप से बचाव हेतु प्रयुक्त पर्दा

सवारी के दौरान आवास एवं शहर में संकेत के लिए प्रयुक्त धूर गोला

पालकी का चित्र

पीपनी हाथ में लिए प्रभु-सेवक

रथ के बड़े बगीचा पहुँचने पर प्रभु की एक झाँकी पाने को लालायित जनसमुदाय

श्री रंग-मंदिर 'ब्रह्मोत्सव'

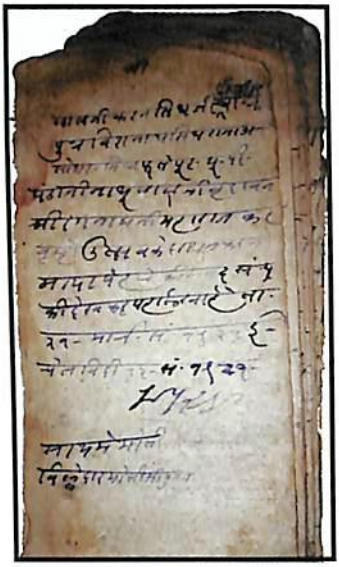

चित्र-४४ (पृष्ठ-४)
श्री ब्रह्मोत्सव की लोकप्रियता को दर्शित कराता पुरानी वही का संवत १९८१ में अंकित विवरण जिसमें असोथर जि.- फूलेपुर के राजा द्वारा अपने अर्दली सहित श्रीब्रहोत्सव के दर्शन हेतुआने एवं वृन्दावन के अन्य मंदिरो में दर्शन किये जाने की जानकारी दर्ज है।

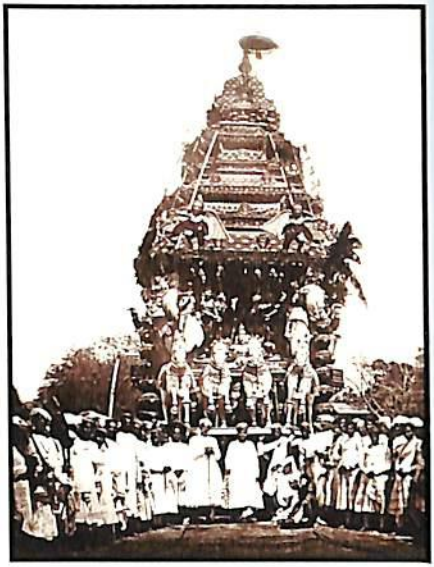

चित्र-४५ (पृष्ठ-५)
श्रीब्रह्मोत्सव के अर्न्तगत आयोजित रथ की सवारी का ब्रिटिशकालीन चित्र
(स्त्रोत - मथुरा ए डिस्ट्रिक्ट मेमोयर्स)

श्रीब्रह्मोत्सव के अर्न्तगत सवारी की सूचना देने हेतु धूरगोला तैयार करते कारीगर चित्र-४६ (पृष्ठ-२)

धूरगोला चलने के बाद उठे गुबार का दृश्य
चित्र-४७ (पृष्ठ-२)

साक्षात्कार

वृन्दावन के श्रीरंग मंदिर में आयोजित श्री ब्रह्मोत्सव के अवसर पर विशाल मेले का आयोजन होता है जिससे स्थानीय जनता के साथ-साथ समीपवर्ती ग्रामीण भी मेले का भरपूर आनन्द लेते देखे जा सकते हैं। वृन्दावन निवासी श्री गोविन्दशरण जी के विचारों से रंगजी के मेले का परिदृश्य उकेरता साक्षात्कार-

प्रश्न : गोविन्द जी श्रीब्रह्मोत्सव के अंतर्गत रथ का मेला आयोजित होता है लेकिन विचित्र संयोग है कि आज अधिकांश स्थानीय जनता इसे श्रीब्रह्मोत्सव न कहकर 'रंगजी कौ मेला' के नाम से ही संबोधित करती है। कृपया इस संदर्भ में हमें समझाएँ?

उत्तर : स्थानीय लोगों की दृष्टि में श्रीब्रह्मोत्सव और 'रंगजी कौ मेला' दोनों एक ही बात है। श्रीब्रह्मोत्सव के अंतर्गत बाहर सवारी के मार्ग पर लगने वाले झूले, दुकानें, खेल-तमाशे, आतिशबाजी एवं रोशनी आदि इसे मेले का स्वरूप ही प्रदान करती हैं। श्रीब्रह्मोत्सव के दौरान जहाँ बच्चे, वृद्ध एवं महिलाएँ सवारियों का दर्शन कर आध्यात्मिक लाभ लेते हैं, वहीं इस दौरान लगने वाले मेले का भरपूर लुत्फ भी उठाते हैं। जिसके चलते इसे रंगजी का मेला कहने की परंपरा सी चल पड़ी है और अब तो अधिकांशत: यह इसी नाम से लोकप्रिय है। मैं स्वयं भी बचपन से रंग मंदिर के इस महाउत्सव का प्रेमी हूँ बल्कि मैं तो दावे के साथ यह भी कहता हूँ कि बाल्यावस्था से लेकर अब ६३ वर्ष की उम्र तक शायद ही किसी वर्ष का कोई मेला मुझसे छूटा हो। रंगजी के इस मेले के प्रति मेरी दिलचस्पी बचपन से ही रही है। एक बार रथ के मेला आयोजन अवसर पर हुए कवि सम्मेलन में मेरी रचना **''आय गयौ रथ को मेला अब, सुन आली री...''** खासी लोकप्रिय हुई जो लोगों में अब तक सुनी जा सकती है। इस प्रकार मेला और श्रीब्रह्मोत्सव में कोई अन्तर नहीं, यह तो जनता द्वारा ठीक उसी प्रकार दिया हुआ नाम है जैसे परकाल स्वामी लीला को आज भी अधिकांश लोग भील लूटन लीला कहकर ही संबोधित करते हैं।

प्रश्न : गोविन्द जी आपने प्रतिवर्ष आयोजित श्रीब्रह्मोत्सव की आयोजन श्रृंखला में बाल्यावस्था से अब तक कोई आयोजन देखे बिना नहीं छोड़ा, बल्कि हर बार एक नई उमंग के साथ मेले की रौनक देखने जाते हैं। ऐसा क्या कारण

है कि इसके प्रति आपकी रुचि अब तक वैसी ही बनी हुई है, जैसी कभी पूर्व में थी?

उत्तर : बचपन और युवावस्था की तो बात ही अलग होती है, उस समय तो बस सवारी में बैठे ठाकुरजी (श्रीविग्रह) को प्रणाम करके पूरा ध्यान मेले की रौनक पर ही केन्द्रित होता है, लेकिन एक बात अवश्य है कि रंगजी के मेला जैसी व्यवस्था शायद ही कहीं देखने को मिले, वह इसलिए कि यहाँ सवारियों का व्यवस्थित क्रम आज भी पूर्व में संचालित परम्पराओं को भाँति देखा जा सकता है। मंदिर में सवारी के उठने, बड़ा बगीचा पहुँचने, वहाँ बैठने तथा उठने एवं मंदिर में आने तक की सूचना 'धूर गोला' जैसे माध्यम से पूरे शहर एवं समीपवर्ती देहात को एक साथ आसानी से मिलती है जिससे लोग अपनी-अपनी सुविधानुसार सवारी के दर्शनार्थ पहुँचते हैं और 'धूर गोला' के संकेत से मंदिर या बड़ा बगीचा पहुँचकर दर्शन लाभ लेते हैं, इतना ही नहीं प्रतिदिन सुबह एवं शाम को निकलने वाली सवारियों के नाम और उसके समय की जानकारी शहर में पर्चे बाँटकर भी जाती है जिससे अधिकाधिक लोग अपने समयानुसार मनोरथ का लाभ ले सकें। इस सबके अलावा प्रत्येक सवारी के साथ निकलने वाले ध्वज, छत्र, प्रतीक चिन्ह एवं वाद्य यंत्रों को देख, यहाँ आकर प्रतिवर्ष मेरे बचपन की स्मृतियाँ एक बार फिर सजीव हो उठती हैं।

प्रश्न : गोविन्दजी आपने रंग मंदिर के मनोरथों की काफी नजदीक से देखा है और श्री ब्रह्मोत्सव (रथ के मेले) को लेकर आपकी भावनाएँ आपकी रचनाओं से दर्शित होती हैं। आप हमें श्रीब्रह्मोत्सव की सवारियों के अलावा इस सन्दर्भ में कुछ अन्य जानकारी प्रदान करें?

उत्तर : रंग मंदिर का श्रीब्रह्मोत्सव परम्परागत मान्यतानुसार पूर्ण विधि-विधान के साथ आयोजित होता है। जिसमें सवारियों के अलावा और भी अनेक मनोरथ मंदिर परिसर में सम्पन्न होते हैं। मुझे इस सन्दर्भ में सूक्ष्मता से जानकारी तो नहीं लेकिन स्थानीय होने तथा एक जिज्ञासु श्रद्धालु होने के नाते मैंने वहाँ ध्वज स्थापना (जिसमें गरुड़ पूजन करके तैंतीस कोटि देवताओं को श्रीब्रह्मोत्सव की जानकारी दी जाती है) जिसमें मैंने दैनिक यज्ञ आदि कई मनोरथ देखे हैं। सबसे आखिर में पुष्प विमान मनोरथ का आयोजन होता है जिसमें बारह भोग तथा बारह आरतियाँ होती हैं। जिसे द्वादश आराधन भी कहा जाता है। इसमें

श्रीब्रह्मोत्सव के अंतर्गत श्रीविग्रह के समक्ष अनजाने में हुए अपराधों यथा प्रसाद, आरती आदि में विलम्ब के लिए क्षमा प्रार्थना की जाती है।

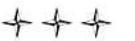

रंग पुरोधा श्री विजय किशोर मिश्र कई पीढ़ियों से श्री रंग मंदिर से जुड़े हुए हैं। वर्तमान में वे यहाँ पौरोहित्य कार्य सँभाल रहे हैं। मंदिर में आयोजित विभिन्न मनोरथों से आप भली-भाँति परिचित हैं तथा यहाँ से निकलने वाला वार्षिक पंचांग भी आप ही के द्वारा तैयार किया जाता है। आचार्य जी से जब हमने श्रीब्रह्मोत्सव के अंतर्गत पौरोहित्य कार्य से संबंधित जानकारियाँ चाहीं तो उन्होंने बड़ी सहजता से हमें इसके महत्व एवं सूक्ष्म जानकारियों से अवगत कराया। उनसे हुए वार्तालाप के कुछ संक्षिप्त अंश—

प्रश्न : आचार्य जी आप हमें ''दिव्य देश'' के सन्दर्भ में जानकारी प्रदान करते हुए यह बताये कि ''श्रीब्रह्मोत्सव'' दिव्य देशों में ही क्यों मनाये जाते हैं?

उत्तर : दिव्य देश वह होते हैं जहाँ नित्य उत्सव हों। इन उत्सवों के दर्शन मात्र से ही मनुष्य के हृदय में बैकुण्ठ की परिकल्पना साकार हो उठती है। उन्होंने बताया ''नित्योत्सवै मंगलम्'' की अवधारणा लिए दिव्य देशों में प्रभु के उत्सव किसी विशेष मनोरथ पर नहीं अपितु नित्य प्रति मनाये जाते हैं। रंग पुरोधा श्री आचार्य जी ने बताया कि श्री ब्रह्मोत्सव का आयोजन वहीं सम्भव है जहाँ गरुड़ स्तम्भ, श्री यागशाला, पुष्करिणी एवं गोपुरम आदि विद्यमान हों और इन सबसे युक्त स्थल ही दिव्य देश कहा जाता है इसलिए श्री ब्रह्मोत्सव का आयोजन दिव्य देश में ही सम्भव है।

प्रश्न : आचार्य जी रथ का मेला जो श्री ब्रह्मोत्सव के अन्तर्गत ही आयोजित होता है की परम्परा एवं रथ-पूजन के विधि-विधान से हमें अवगत कराते हुए आप इसकी जानकारी प्रदान करें?

उत्तर : श्री ब्रह्मोत्सव के अन्तर्गत प्रत्येक मनोरथ पूर्ण विधि-विधान से सम्पन्न होता है। इसी प्रकार रथ का मेला जो सप्तम दिवस में नौवीं को आयोजित होता है की तैयारियाँ परम्परानुसार एक दिन पूर्व से ही आरम्भ हो जाती हैं अर्थात् छठे दिवस में ही शुभ मुहूर्त में रथ के स्वर्ण कलश एवं छत्र को पूजन-अर्चन विधि-विधान से होता है। उन्होंने बताया रथ का पूजन हम लगातार पाँच पीढ़ियों से कराते आ रहे हैं जिसमें श्री विष्वक सेन पूजन, कलश स्थापन, पुण्य वाचन, नवग्रह पूजन, दस दिकपाल पूजन, गोदारंगमन्नार पूजन, बलिदान,

दध्योदन आदि पूजन-अर्चनाएं की जाती हैं। रथ चलने से पहिले कूष्माण्ड (पेठे) की बलि चारों पहियों के नीचे दी जाती है। साथ ही पाँच श्रीफल (पानी के नारियल) से बलि के बाद दिव्य प्रबन्ध पाठ कुम्भ आरती, मंत्र पुष्पांजलि एवं परिक्रमा के उपरान्त रथ यात्रा प्रारम्भ होती है।

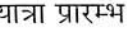

आचार्य श्री नरेश नारायण जी रामानुज सम्प्रदाय से जुड़े अधिकारी विद्वान हैं। आप सम्प्रदाय के विषयों से संबंधित अनन्त संदेश मासिक पत्रिका के प्रधान संपादक हैं। आपने यहाँ आयोजित मनोरथों को न केवल बचपन से देखा है बल्कि इसे गहराई से समझा भी है; आचार्य जी से हुई वार्ता के दौरान उनसे प्राप्त जानकारियों को प्रस्तुत करता साक्षात्कार-

प्रश्न : आचार्य जी श्री ब्रह्मोत्सव की परम्परा दिव्य देशों में ही देखने को मिलती है। इस मनोरथ के संदर्भ कई और मान्यताएँ भी प्रचलित हैं। कृपया सविस्तार जानकारी प्रदान करें?

उत्तर : आम लोगों की धारणा सामान्यतया यही रहती है कि प्रभु के उत्सव कोई भी कहीं मना सकता है। किन्तु दिव्य देशों में आयोजित होने वाले श्रीब्रह्मोत्सवों का यह वैशिष्ट्य है कि इसका आयोजन दिव्यदेशों में ही सम्भव है चूँकि श्रीब्रह्मोत्सव श्रीनारद पाँचरात्र आगम पद्धति के अनुसार सम्पन्न होते हैं, अत: जहाँ इस पद्धति के ज्ञाता होंगे, वहीं ये विधि-विधान पूर्वक सम्पन्न हो सकता है। दिव्य देशों में श्री गरुड़ स्तम्भ, श्री यागशाला एवं बलिपीठम् आदि विद्यमान होते हैं जिससे वहाँ इस उत्सव को सविधि सम्पन्न किया जा सकता है। उन्होंने बताया पाँचरात्र प्रवर्तक ऋषि श्री शाण्डिल्य, श्री भारद्वाज, श्री औपगायन, श्री मौञ्जायन एवं श्री कौशिक आदि गुरुओं को भगवान् ने स्वयं बताया है जिससे विभिन्न संहिताओं में आंशिक भिन्नता देखी जा सकती है जिससे अलग-अलग दिव्य देशों में अर्चना-क्रम, सवारी एवं श्रृंगार आदि में थोड़ी भिन्नता मिलना स्वाभाविक है।

प्रश्न : आचार्य जी श्रीब्रह्मोत्सव दौरान निकलने वाली सवारियों में कभी दिव्य दम्पत्ति श्रीगोदारंगमन्नार की सवारी तो कभी अकेले प्रभु ही विभिन्न वाहनों पर दर्शन देते हैं कृपया इस विषय को स्पष्ट करते हुए हमारा मार्ग दर्शन करें?

उत्तर : दस दिवसीय ब्रह्मोत्सव के अन्तर्गत प्रतिदिन प्रातः एव सायँ बेला में निकलने वाली सवारियों की श्रृंखला में विविध मनोरथानुसार अलग-अलग वाहनों पर सवारियाँ निकलती हैं जिनमें कभी अकेले प्रभु की सवारी तो कभी दिव्य दम्पत्ति गोदारंगमन्नार की अद्‌भुत झाँकी दर्शित होती है। उन्होंने बताया श्रीब्रह्मोत्सव के अन्तर्गत निकलने वाली सवारियों में पूर्ण कोठी, सूर्यप्रभा, हंस, गरुड़ जी, हनुमान जी, शेष जी, कल्प वृक्ष, पालकी (यमुना स्नान), चन्द्रप्रभा एवं पुष्पक विमान आदि वाहनों पर मनोरथों के लीलाप्रसंगानुसार कभी दिव्य दम्पति गोदारंगमन्नार तो कभी अलग-अलग वाहनों पर अकेले प्रभु की सवारी जिनके कथानक लीला विशेष से सम्बन्धित होते हैं, निकलती हैं। जैसे गजेन्द्र मोक्ष प्रसंग में भगवान अकेले ही गरुड़ पर सवार होकर उनका उद्धार करने आते हैं। अतः गरुड़ वाहन पर श्री प्रभु अकेले ही विराजते हैं।

प्रश्न : आचार्य जी रथ की सवारी के दौरान पहियों के नीचे कूष्माण्ड (पेठे) की बलि तथा श्रीफल (पानी के नरियल) आदि नैवेद्यों की बलि प्रदान करने संबंधी परम्परा से हमें अवगत कराने की कृपा करें?

उत्तर : यहाँ बलि का तात्पर्य हिंसा से नहीं अपितु परम्परा विशेष से है जिसके अन्तर्गत सम्बन्धित देवताओं, दिकपालों आदि को सम्मान देते हुए उनको, उनके अधिकार स्वरूप नैवेद्य अर्पित किया जाता है। रथ की सवारी के आरम्भ होने से पूर्व दस दिकपाल पूजन, नव ग्रह पूजन, बलिदान, दध्योदन आदि एवं रथ के वाहक देवताओं, नाग, गंधर्व तथा चौंसठ योगनियाँ जो रथ की सुरक्षा के निमित्त होते हैं को उनके सम्मानस्वरूप नैवेद्य अर्पित किया जाता है। इस प्रकार रथ के चारों पहियों के नीचे पेठा (कूष्माड़) लगाकर बलि परम्परा के उपरान्त रथ यात्रा आरम्भ होती है।

शब्दानुक्रमणिका

एफ.एस. ग्राउस - ३,१२
उच्चैश्रवा - १२
कमल कुंवरि - ४
कल्पवृक्ष - २,९
काँच का विमान - २,१०
गरुड़ स्तम्भ - ३,४
गाड़ा - ४
गेंद बच्छी - २,१७
गोदा देवी - ३
गोदारंगमन्नार - २,३,५,८,९,११,१३
गोपुरम - ३
घोड़ा की सवारी - २,५,१४,१५,१६
चँवर - ११
चन्द्रप्रभा - २,५,१८
छत्र - १५
छोटी आतिशबाजी - ८
डाट - १३,१४
धूरगोला - २,६
परकाल स्वामी - १५,१६
परकाल स्वामी लीला - १,२,१५
पालकी - २,५,१०,१७
पुष्प विमान - २,१८
पूर्णकोठी - २,७
पीपनी - १३
प्रणय कलह - २
फानी - १,४,१३
बड़ी आतिशबाजी - १५
बारहद्वारी - ३
ब्रह्मोत्सव - १,२,३,४,५,६,७,८,९
१०, ११,१२,१४,१७,१८
यमुना स्नान - २,१८
रंगाचार्य जी महाराज - ३
रंगीन फव्वारे - १३,१४
रथ का मेला - २
रथ की सवारी - १,११
रथघर - १२
वाहक देवता - १२
वाहन घर - ४
विष्वकसेन जी - ५
वीथी शोधन - ५
शीशमहल - ३
शेषजी - २,९
सिंह वाहन - २,७
सिंह शार्दूल - २,१०,१२
सूर्यप्रभा - २,५,८
सेठ गोविन्ददास-३
सेठ राधाकृष्णदास -३
सेठ लक्ष्मीचन्द - ३
हंस वाहन - ८
हनुमान जी - २,५,८,९
हाथी की सवारी - २,५,११

*

धन-धन रंगनाथ कौ मंदिर, राधा कृष्ण साह बनवायौ, लक्ष्मीचंद सहोदर....

श्री रंग मंदिर वृन्दावन का विहंगम दृश्य।

आय गयौ मेला अब रथ कौ सुन आली री...

श्री ब्रह्मोत्सव के अन्तर्गत आयोजित रथ के मेले में रथ को खींचता जन-समुदाय।

छाया : उमाशंकर पुरोहित